रविवारीय सभा में प्रभु की आराधना पद्धति (कलीसीया की सारी मण्डली अपना सारा ध्यान प्रभु पर लगाते हुए शांत रहे)

जबकि सारी मण्डली खड़ी है और भजन के अंतिम पद को गा रही है, तब प्रचारक कलीसिया में प्रवेश करता है ।

प्रचारक (प्र) : पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम में ।
मण्डली (म) : आमीन

(प्र) : (परमेश्वर की तारीफ करते हुए प्रार्थना) : हे परमेश्वर आपने अपने आप को पिता पुत्र और पवित्र आत्मा के रूप में प्रकट किया, इसलिए हम आपके इस प्रकाशन के लिए आपको स्तुति अर्पित करते हैं आराधना का यह समय प्रदान करने के लिए हम आपका आदर करते हैं हालांकि स्वर्गदूत और स्वर्गीय संत आपकी स्तुति कर रहे हैं, उनकी स्तुति के आलावा आप हमसे स्तुति पाने की भी इच्छा रखते हैं, इसलिये हम आपकी महिमा करते हैं, आपके द्वारा रची गई सारी सृष्टि के कारण आपका आदर और सम्मान होता है इसलिए सारी सृष्टि के साथ

मिलकर हम भी आपको दण्डवत करते हैं हे प्रभु, हम विनती करते हैं कि इस आराधना सभा को आशीषित करें ताकि इस सारे समय के दौरान आप ही महिमा पाएं हम यह प्रार्थना अपने प्रभु यीशु मसीह के नाम में मांगते हैं आमीन ।

(प्र) : प्रभु मे प्रियो, जब हम अति महान परमेश्वर की उपस्थिति में आते हैं, तो आराधना में पुरी तरह प्रवेश करने से पहले यह बहुत लाभदायक है कि हम अपने पापमय स्वभाव का अंगीकार करके क्षमा प्राप्त करें यदि हम अपने पापों का अंगीकार कर लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है यदि हम कहें कि हमने पाप नही किया, तो उसे झूठा ठहराते हैं और उसका वचन हममें नहीं है धन्य है वह जिसका अपराध क्षमा किया गया और जिसका पाप ढांपा गया हो धन्य है वह मनुष्य जिसके अधर्म का प्रभु लेखा न ले, और जिसका आत्मा में कपट न हो ।

(प्र) : आइए हम अपने पापों का अंगीकार करें

(मण्डली प्रचारक के पीछे पीछे इसे दोहराए)

(प्र) : और (म) : हे अति महान परमेश्वर ! हम अपने जन्म से और अपने स्वभाव ही से पापी है । हम अपने विचारों और दृष्टि के कारण पापी है हम अपने सुनने और बोलने में भी पापी हैं। यहाँ

तक कि हम अपने व्यवहार और कामों में भी पापी हैं और हम आपके लायक नही हैं । हम विनती करते हैं कि अपने बेटे, यीशु मसीह के द्वारा क्षमा कर अमीन् ।

(प्र) : है प्रियो ! पिता अपने अति महान प्रेम के कारण सभी विश्वासियों के पापों को क्षमा कर रहा है । वह दण्ड पसंद नही करता । यहाँ तक कि वह हमारे पापों को याद नही रखेगा । इसलिए आइए ऐसे पिता की हमेशा स्तुति करते रहें ।

(प्र) : आइए हम अपने पापों का अंगीकार करें

(मण्डली प्रचारक के पीछे पीछे इसे दोहराए)

(प्र) : और (म) : हे अति महान परमेश्वर हम अपने जन्म से और अपने स्वभव ही से पापी है । हम अपने विचारों और दृष्टि के कारण पापी हैं हम अपने सुनने और बोलने में भी पापी हैं । यहाँ तक कि हम अपने व्यवहार और कामों में भी पापी हैं। और हम आपके अनुग्रह के लायक नही हैं । हम विनती करते हैं कि अपने बेटे, यीशु मसीह के द्वारा हमें क्षमा कर आमीन ।

(प्र) : हे प्रियो ! पिता अपने अति महान प्रेम के कारण सभी विश्वासियों के पापों को क्षमा कर रहा है। वह दण्ड देना पसंद नही करता यहाँ तक कि वह हमारे पापों को याद नही रखेगा । इसलिए आइए ऐसे पिता की हमेशा स्तुति करते रहें ।

(प्र) : हे पिता ! जबकि आप पवित्र हैं, आपको तो पापियों से नफरत करनी चाहिए परन्तु आप ऐसा नही कर रहें हैं, आप उन्हें अपने कोमल प्रेम और दया के द्वारा क्षमा कर रहे हैं इसलिए हम आपकी महिमा करते हैं, आमीन ।

(मण्डली बैठ जाती है)

(इस विश्वास के साथ कि पिता ने हमारे पाप क्षमा कर दिए हैं, आइए इस गीत को गाए) (मुक्ति दिलाए यीशु......हम सब के पापा की मिटाने)

(प्र) : १. पिता परमेश्वर को याद करते हुए (पुराने नियम की किसी पुस्तक में से एक भाग पढ़ा जाए)

२. पुत्र परमेश्वर को याद करते हुए (किसी एक सुसमाचार में से एक भाग पढ़ा जाए)

३. पवित्र आत्मा परमेश्वर को याद करते हुए (किसी एक पत्नी में से एक भाग पढ़ा जाए)

(प्र) : हे त्रिएक परमेश्वर, आपने अपना वचन हमें दिया है, एक ऐसा उपहार को पृथ्वी और आकाश और सोने और चांदी से भी अधिक मूल्यवान है । इसलिए हम आभारी हृदय से आपकी स्तुति करते हैं, आपने इस पुस्तक में उन सभी वचनों को शामिल

किया है, जो आप व्यक्तिगत रूम में हमसे कहना चाहते हैं, इसलिए हम अपनी सारी श्रद्धा आपको अर्पित करते हैं, आमीन।

(प्र) : और (म) : मैं प्रतीत करता / करती हूँ कि परमेश्वर का न तो आरम्भ है और न अन्त है। मैं प्रतीत करता/करता हूँ कि परमेश्वर अपने प्रेम, न्याय, पवित्रता, सामर्थ, सर्वज्ञान, जीवन, स्वतन्त्रता और सर्वव्यापिता आदि गुणों की भव्यता में अनन्तता से अनन्तता तक शोभायमान है।

मैं प्रतीत करता / करती हूँ कि प्रभु यीशु मसीह बाहरी स्वरूप में मनष्य परन्तु अनन्तता में परमेश्वर था मैं यह भी प्रतीती करता / करती हूँ कि उसने अपने आलौकिक प्रचार, चमत्कारी भले कामों और मेरे पापों, रोगों, दण्ड को उठाते हुए क्रुस पर की स्वेच्छात्मक मृत्यु, तीसरे दिन मुर्दों में से जी उठने और स्वर्गारोहण के द्वारा परमेश्वर के प्रेम और वास्तविक परमेश्वरत्व को प्रकट किया मैं यह भी प्रतीत करता / करती हूँ कि अब वह सारी मनुष्यजाति के लिए मध्यस्थी कर रहा है और अपने दूसरे आगमन में अपनी कलीसिया को रैप्चर में उठा ले जाने के लिए वापिस आएगा उसके बाद पीछे छूट जाने वाले लोगों के लिए भयानक क्लेश के सात वर्ष आऐंगे, उसके बाद मसीह-विरोधी और मसीह के बीच हरमगिद्दोन के युद्ध में मसीह-विरोधी और झुठा भविष्यवक्ता आग

की झील में डाल दिए जाऐंगे और शैतान का एक हजार वर्ष के लिए अथाह कुण्ड में बान्धा जाएगा और उस समय के दौरान प्रभु सारी पृथ्वी पर एक हजार वर्ष के लिए राज्य करेगा और मैं राह भी प्रतीत करता/करती हूँ कि अपने राज्य के अन्त के में प्रभु सभी जीवते और मुर्दो का न्याय करेगा । जब प्रभु मसीह, शैतान को अथाह कुण्ड में से छोड़ेगा, तो शैतान गोग और मगोग नामक दो सेनाओं को स्थापित करेगा और परमेश्वर के विरुद्ध लड़ेगा, जिसमें शैतान की हार निश्चित है, और मसीह उसे आग की झील में फेंक देगा । मैं प्रतीत करता/करती हूँ कि उसके बाद प्रभु सभी लोगों का न्याय करेगा और गैरविश्वासियों को आग की झील में भेज देगा । मैं प्रतीत करता/करती हूँ कि, अन्त में, जब संत पृथ्वी पर एक गठित क्लीसिया के रूप में होंगे तो पृथ्वी स्वर्ग का एक भाग बन जाएगी और प्रभु मसीह स्वर्ग और पृथ्वी दोनों में निवास करेगा ।

मैं पवित्र आत्मा मैं प्रतीत करता/करती हूँ और यह भी कि वह पिता और पुत्र के साथ मिलकर एक परमेश्वर के रूप में काम कर रहा है । मैं यह भी प्रतीत करता/करती हूँ कि पवित्र बाइबल उसी की प्रेरणा से लिखी गई थी और इसे उसी के द्वारा दिए गए प्रकाशन में ही समझा जा सकता है और यह भी कि पिता के द्वारा

इच्छित और पुत्र के द्वारा अपने लहू में होकर प्रयोजन किया गया उद्धार केवल वो ही विश्वसियों को दे सकता है । मैं यह भी प्रतीत करता/करती हूँ कि पवित्र आत्मा परमेश्वर है और पिता व पुत्र के तुल्य ही आराधना के योग्य है । मैं पवित्र लोगों के साथ संगति, पुनरूत्थान और अनन्त जीवन में प्रतीत करता/करती हूँ

(जब मण्डली बैठती है, तो एक गीत गाया जा सकता है)

संदेश के लिए प्रार्थना

(प्र) : हे परमेश्वर ! जिसने हमें अपना वचन प्रदान किया, अब हम आपके मूल्यवान वचन को समझाने जा रहे हैं । कृपया ऐसा संदेश दें जो सभी के लिए आवश्यक है । हम विनती करते हैं कि हमारी समझ को ज्योर्तिमय करने के लिए अपने आत्मा का मार्गदर्शन दें, हम यह प्रार्थना प्रभु यीशु मसीह के नाम में मांगते हैं

। अमीन ।

संदेश

संदेश के अन्त में प्रार्थना की जाए ।

(प्र) : हे प्रभु, हम विनती करते हैं कि आपका वचन आपकी महिमा के लिए हममें फल लाए । आमीन ।

भेंट का गीत - भेंट

जब भेंट का गीत गाया जाता है तो भेंट उठाई जाए ।
(जब मण्डली खड़ी है तो प्रचारक भेंट के लिए प्रार्थना करे)

(प्र) : हे पिता ! क्योंकि आप ही हमारे लिए सब प्रयोजन करते हैं, तो हम आपको वापिस क्या लौटा सकते है ? जो आपने हमें दिया है, उसे हम भेंट के रूप में आपको दे रहे हैं, कृपया अपने सेवाकार्य में इसका इस्तेमाल करें । आमीन ।

सूचनाएँ

समर्पन प्रार्थना

(प्र) : हे सर्वव्यापी परमेश्वर, अपने सुसमाचार को सारे संसार में फैला । सभी धर्मों के लोगों तक अपनी अच्छी खबर पहुँचा । अपनी क्लीसिया को सामर्थ से सरोबार कर ताकि वह संसार के सामने एक उदाहरण के रूप में खड़ी हो सके । हमें सभी अनचाहे धार्मिक विवादों, झगड़ों, झूठी शिक्षाओं, पापमय प्रलोभनों से छुड़ा और पाप के कारण होने हानियों से हमें बचा ।

अकालों, रोगों और अनदेखियों के समय में लोगों के हृदयों को अपनी ओर मोड़ ले । और इस संसार में मनुष्य के जीवन के लिए लाभदायक हो रहे कार्यों पर आशीष दे विश्वासियों का अपने

पवित्र आत्मा से भर और उन्हें अपने दूसरे आगमन के लिए तैयार कर ।

सभी लोगों और निर्धनों को आशीष दे स्कूलों, अस्पतालों अनाथालयों, बाइबल सोसायटी, ट्रैक्ट सासाइटी और सभी व्यवसायों, और वायु भूमि, जल और मरूस्थलों के सभी यात्रियों, और सरकारी योजनाओं को अपनी सुरक्षित देखरेख में आशीष दे और उन्हें उन्नत कर ।

सभी तारांगणों, पक्षियों, पशुओं, पेड़ों, फसलों, और सारी सृष्टि पर अपनी दया न्यौछावर कर आप पर यह दोष न लगने पाए कि परमेश्वर ने इस जीत या उस वस्तु का आशीष नही दी ।

सभी लोगों को अन्याय, अपमान, लूटपाट, हत्या, निराशा, दुर्घटनावश मृत्यु, भूकम्पों, युद्धों, अनदेखे खतरों, और हरेक विनाशों से बचा, मशीनों पर काम करने वाले लोगों और उपयोग औजार बनाने वाले और लोहा व इस्पात गलाने वाली भट्टीयों पर काम करने वाले सभी मजदूरों को आशीष दे लकड़ी, मिट्टी, तांबा, पीतल, और ऐसी अन्य धातुओं के कारीगरों और खनीज भण्डारों, और बर्तन और वाद्ययन्त्र बनाने वालों को आशीष दे कताई-बुनाई करने वलों और व्यापारियों को आशीष दे झुंडों और चरवाहों की रक्षा कर घरों, इमारतों, गगनचुम्बी इमारतों और कलीसियाओं का

निर्माण करने वाले राजमिस्त्रीयों को और अच्छी और उपयोगी पुस्तकों को प्रकाशित करने वाले सम्पादकों को भी आशीष दे और समस्याओं में फंसे लोगों को उपयोगी सलाह देने वाले सलाहकारों को बुद्धि उक्ति विचार, समझ शक्ति, और भविष्य में देखने की योग्यता दे उन पशु और पक्षियों को आशीष दे हो दिनभर कमाई करते हैं, और रोगी और घायल होते रहते है प्रार्थना योद्धाओं को प्रार्थना के सभी विषय पूरी तरह याद दिला और अनुग्रह कर कि वे अधिक से अधिक प्रार्थना एवं विनती कर पाऐं । सभी लोगों के लिए निरंतर प्रार्थना करने के लिए उनकी आत्मा में प्रेरण डाल । हालांकि कई लोग अलग अलग व्यवसायों और हुनरों के लिए चुनें गए हैं, परन्तु हम विनती करते हैं, हे प्रभु प्रार्थना के कार्य के लिए कुछ लोगों को चुन और अलग कर ।

फैक्ट्रियों, खदानों, सुरंगों और पानी की गहराईयों में काम करने वाले लोगों की सुरक्षा कर जहरीले जीवों, वनपशुओं और दुष्ट लोगों से हमारी रक्षा कर यदि प्रार्थना का कोई विषय छूट गया हो तो हम उसे भी, हे प्रभु आप ही के सामने रखते है ।

हे पिता ! आप जो हमारे सब कामों और इच्छाओं के हमारी आवश्यकताओं और कल्पनाओं से भी बढ़कर पूरा करने के लिए तैयार रहते हैं, हम विनती करते हैं कि हमारी सभी प्रार्थनाओं को

अपने सुनिश्चित समय में स्वीकार और पूरा करें और हम इन सभी विनतीयों और प्रार्थनाओं को अपने शीघ्र आने वाले प्रभु यीशु मसीह के नाम में, मांगते हैं, अमीन ।

प्रभु की प्रार्थना

हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है, तेरा नाम पवित्र मान जाए, तेरा राज्य आए तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो, हमारी दिनभर की रोटी आज हमें दे और जिस प्रकार हमने अपने अपराधियों को क्षमा किया है, वैसे तु भी हमारे अपराधों को क्षमा कर और हमें परीक्षा में न ला, परन्तु बुराई से बचा, क्योंकि राज्य और पराक्रम और महिमा सदा तेरे ही हैं, अमीन ।

आशीष वचन

(प्र): प्रभु (यहोवा) तुझे आशीष दे और तेरी रक्षा करे ।

प्रभु (यहोवा) तुझ पर अपने मुख का प्रकाश चमकाए और तुझ पर अनुग्रह करे ।

प्रभु (यहोवा) अपना मुख तेरी ओर करे, तुझे शांति दे ।

प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह, और परमेश्वर का प्रेम, और पवित्र आत्मा की सहभागिता तुम सब के साथ होती रहे । आमीन् ।

* * *

प्रारम्भिक प्रार्थना

हे प्रभु त्रिएक परमेश्वर, हम तेरी स्तुति करते हैं क्योंकि हमारे जीवनभर हमारे लाभ के लिए तु अपने अलौकिक गुणों को प्रकट करता रहता है। तुने अपना जीवन और अपना प्रकाश हमें प्रदान किया है। तु हमारी ओर अपने अलौकिक प्रेम को प्रदर्शित करता है। हमारी निर्बलताओं के समय में तू हमें अपना बल देता है। तू हमें हमारे गलत मार्गों में हमें सुधारने के लिए हमारी सहायता करता है। क्योंकि तू धर्मी और नियमबद्ध है। तू अपनी पवित्रता से हमें शुद्ध करता है। तू अपने अदृश्य तेज से हमारे विश्वास को मजभूत करता है। इसलिए हम तेरे विविध आलौकिक धन्य गुणों के लिए तेरी आराधना करते हैं। हम पर अपने आलौकिक गुणों को प्रकट करने के निरंतर यत्नों के लिए हम तेरे लिए अपनी हार्दिक स्तुति अर्पित करते हैं ।

हम तेरी अनन्तता में असीमता पाते हैं। तेरे प्रेम में इन्साफ है। तेरे इन्साफ में पवित्रता है। तेरी पवित्रता में समर्थ है। तेरे अदृश्य तेज में प्रकाशन है। तेरे एक आलौकिक गुण में तेरी सारी आलौकिक श्रेष्ठताएं शामिल और प्रकट हैं। इसलिए जब हम यह पहचान जाते हैं कि तुने अपनी एक आलौकिक श्रेष्ठता सम्पूर्णता में हमें दी है तो हम यह भी समझ जाते हैं कि तुने हम पर अपने

सारे आलौकिक गुण उण्डेल दिए हैं । जब हम यह भी समझ जाते हैं कि तेरी श्रेष्ठताओं का भी न तो कोई आरम्भ है और न ही अंत है । जैसे हम तीन व्यक्तियों अर्थात्, एक परमेश्वर में पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा, जिसकी हम आराधना करते हैं, को अलग नही कर सकते, उसी प्रकार हम आलौकिक गुणों को भी एक दूसरे से अलग नही कर सकते । जब हम अपने मनों में तेरी एक श्रेष्ठता के बारे में सोचते हैं तो तेरी सारे आलौकिक गुण तुझ में एक समान क्रियाशील हैं, हम तेरी स्तुति करते हैं क्योंकि तू अपने आलौकिक गुणों को हममें चिरस्थाई रूप में डाल देना चाहता है ।

जिस प्रकार ताप, रोशनी और आकार मिलकर आग की ज्वाला बनते है, उसी प्रकार पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा मिलकर एक परमेश्वर बनते हैं, जिसकी हम आराधना करते हैं । यदि हम आग की ज्वाला में से एक भाग को भी हटा दें, और चाहे बाकी के दो भाग बने रहें, तो भी सारी आग बुझ जाएगी । यदि हम तेरी किसी एक श्रेष्ठता का अस्वीकार कर दें तो इसका अर्थ तेरे बाकी के सारे आलौकिक गुणों को अस्वीकार करना है । जब तू किसी व्यक्ति को अपने न्याय के अनुसार दण्ड देता है तो हम उसे पसंद नही करते उसी प्रकार जब तू हमें प्रेम करता है तो हम उसे पंसद क्यों करते हैं ? इस पर हमारा नजरिया अनुपयुक्त है, परन्तु तेरा नजरिया

पवित्र और न्यायपूर्वक है, ठिक वैसे ही जैसे तू स्वयं पवित्र है । इसलिए हम तेरा आदर करते हैं । जब हममें से किसी को तेरे आलौकिक गुणों की आवश्यकता होती है तो वह व्यक्ति तेरे पवित्र चरणों में बैठकर इन्तजार करने की बजाय किसी दूसरे के पास क्यों जाता है ?

हे परमेश्वर हमें अपना अनुग्रह प्रदान कर ताकि तेरे सारे आलौकिक गुण हममें निरंतर दृढता से स्थापित होते रहें । हे दयालू परमेश्वर, तुने हमें यह चुननें की आजादी दी है कि हम तेरे आलौकिक गुणों को जितना चाहें उतना इस्तेमाल कर सकें । यदि तु हमें अपने सारे आलौकिक गुण दे परन्तु चुनने की आजदी का गुण न दे तो बाकी सारे गुण भी बेकार हैं । इसलिए हम तेरा धन्यवाद करते हैं कि तुने हमें चुननें की आजादी का गुण भी दिया है । जब तुने हमें अपने सारे आलौकिक गुण प्रदान किए हैं, अर्थात्, हमने उन्हें एक साथ रखते हैं तो एक मोमबत्ती की ज्वालां से बाकी की मोमबत्तीयां भी जल उठेंगी और सारी मोमबत्तीयों का प्रकाश एक दूसरे के साथ घुलमिल जाएगा । जिसे अलग नही किया जा सकता । उसी प्रकार तेरे सारे आलौकिक गुण भी एक दूसरे के साथ जुडे हुए हैं । अपने सारे आलौकिक गुणों को हममें भी इसी प्रकार सुरक्षात्मक और चिरस्थाई रूप में डाल दे । तूने अपने दीपक

जलाने वाला दीपक को प्रकाशमान रखता है, हे प्रभु हमारे दीपकों को बिना बुझे निरंतर प्रकाशमान रख । तुने कहा है कि ‘‘मैं जगत की ज्याति हूँ’’। हम देखते हैं तुने इस जगत में सभी में अपनी ज्याति डाली है, और इसलिए हम तेरा धन्यवाद करते हैं ।

तुने भीड़ से कहा था, ‘‘तुम जगत की ज्याति हो’’ इसलिए हम यह जानते हैं कि तुने अपनी ज्योति हममें डाली है, इस वरदान के लिए हम तेरा धन्यावाद करते हैं । हे हमारे पिता, बीते समयों में लोगों ने तुझ में ज्याति देखी है । अब हम यह प्रार्थना करते हैं कि जो ज्योति तूने हममें डाली है उसे दूसरों को देखने में सक्षम बना । हम यह समझते हैं कि इस ज्योति में तेरे सारे आलौकिक गुण शामिल हैं । प्रभु ने अपनी सृष्टि और अपनी रचनात्मकता के द्वारा अपनी ज्योति हममें डाली है । वह कहता है, ‘‘तुम्हारा प्रकाश सब मनुष्यों के सामने चमके’’ । इसलिए उसने अपने वचन में आज्ञा दी है कि हम उठें और प्रकाशमान हों (यशायाह ६०:१) हे प्रभु हमें अपना प्रकाश दूसरों को दिखाने का बल प्रदान कर । ताकि हम अपने आलौकिक गुणों को प्रकट कर सकें । जब स्विज ऑन होता है तो प्रकाश आता है । जब यह ऑन होता है तो प्रकाश चमकता है । उसी प्रकार जब हम अपनी बुद्धि से, परमेश्वर की ओर से हममें डाले गए आलौकिक गुणों को स्विच

ऑन करते हैं तो परमेश्वर के आलौकिक गुण प्रकट होंगे । हे परमेश्वर, जब तेरा दिया हुआ कोई आलौकिक गुण प्रकट होंगे । हे परमेश्वर, जब तेरा दिया हुआ कोई आलौकिक गुण धीमा होने लगे तो उसे बुझने से बचा और उसे पुर्नस्थापित कर और फिर से उसे जागृत कर । जब चारों में से कोई दीपक धीमा होने लगे तो स्वामी उसे फिर से प्रकाशमान करता है । जैसा मैंने पहले भी कहा था कि यदि एक दीपक बुझ जाए तो बाकी के दीपक भी अपने आप बुझ जाएंगे । यह पूरे जीवनभर में होता है । यह अनुग्रह के समय में नही होगा क्या हम किसी चोर में भी एक अच्छी गुण को नही देखते ।

प्रार्थना का सारांश :

१. हे प्रभु, हमारे दीपक हमेशा निरंतर प्रकाशमान होते रहें ।
२. हे प्रभु, हमें अपने आलौकिक गुणों के मार्ग से न भटकने दे.
३. हे प्रभु, तेरे आलौकिक गुणों को हमारे जीवनों के द्वारा दूसरों के सामने निरंतर चमकने दे । आमीन ।

नोट : अपने आप को जांच देखें कि परमेश्वर का कौन सा आलौकिक गुण आज भी विद्यमान है । आपसें क्या है ? प्रेम, इन्साफ, या धीरज ? कृपया ऐसा न कहें कि आप सनातन हैं

बल्कि यह कहें कि आप अनन्त हैं । अपने आप को जांच कर देखें कि आप में शारीरिक जीवन के साथ आत्मिक जीवन भी है या नही । क्या आप में परमेश्वर के द्वारा उण्डेला गया प्रेम है ? क्या यह धीमा हो गया है ? परमेश्वर की उपस्थिति में निरंतर मनन करने के द्वारा ये आलौकिक गुण धीरे धीरे बढ़ने लगेंगे । यदि ये नही बढ रहे हैं तो जांच कर देखें कि परमेश्वर की उपस्थिति में निरंतर मनन करने के आपके अभ्यास में कहां कमी है ।

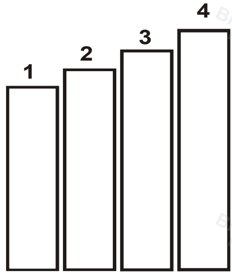

प्रार्थना का कदम :

कदम १ : प्रार्थना

कदम २ : आत्म-परीक्षण

कदम ३ : परमेश्वर की स्तुति

कदम ४ : प्रार्थना में दृढ़ता से स्थापित हो जाना ।

१. यदि आपके पास जीवन है - उसकी स्तुति करें यदि नही है तो इसके लिए प्रार्थना करें ।

२. यदि आपके पास प्रेम है - उसकी स्तुति करें यदि नही है तो इसके लिए प्रार्थना करें ।

Bible Mission HQ Guntur

३. यदि आपके पास पवित्रता है - उसकी स्तुति करें यदि नही है तो इसके लिए प्रार्थना करें ।

४. यदि आपके पास इन्साफ है - उसकी स्तुति करें यदि नही है तो इसके लिए प्रार्थना करें ।

५. यदि आपके पास आज़र्दा है - उसकी स्तुति करें यदि नही है तो इसके लिए प्रार्थना करें ।

६. यदि आपके पास बुद्धि है - उसकी स्तुति करें यदि नही है तो इसके लिए प्रार्थना करें ।

७. यदि आपके पास सर्वव्यापिता है - उसकी स्तुति करें यदि नही है तो इसके लिए प्रार्थना करें ।

✻ ✻ ✻

Bible Mission HQ Guntur

परमेश्वर के आलौकिक गुणों के लिए उसकी स्तुति करना

(मण्डली की सभा में उपयोग करने के लिए स्तुति)

असीमित स्वरूप : हे असीमित परमेश्वर, तू बिना रचना के ही (यहां तक कि पृथ्वी की नींव रखे जाने से पहले से) अस्तित्व में है । तू हमारे सारे कामों को देख रहा है । सृष्टि की रचना से पहले से ही तू ने हमारी जरूरत की सारी वस्तुओं की योजना बनाकर उनका प्रयोजन कर दिया था । इसलिए हम तेरा बहुत आदर करते हैं ।

अनन्ता : हे अनन्त परमेश्वर, तू सदाकाल से अस्तित्व में रहा हैं । तु ने सारे समयों और सभी युगों एंव हमारे लाभ के लिए अपनी असीमित उपस्थिति और सबकुछ प्रदान किया है ताकि यह हमारी सम्पूर्ण संतुष्टि के लिए लाभदायक हो सके । इसलिए हम अपनी स्तुति तेरे लिए अर्पित करते हैं ।

प्रेम : हे प्रेम के पिता, यदि तू अपने आप को त्रिएक परमेश्वर के रूप में प्रकट न करता तो हम तुझ से प्रेम नही कर पाते । सारी सृष्टि में तेरा महान प्रेम दिखाई देता है । हमारे लिए तेरा प्रेम, हमारे बच्चों के लिए हमारे प्रेम से भी कहीं अधिक बढ़कर है । तेरे प्रेम के

कारण ही तू ने हमें रचा है । हमारी ओर तेरा प्रेम बहुत महान है । हमारी ओर तेरे प्रेम के कारण ही तू ने हमारे लिए पहले से ही सबकुछ सोचा और सबकुछ उपलब्ध किया । केवल उसी प्रेम के कारण ही तू हमें सहता रहता है, हमें सुधारता है और हमें क्षमा करता है । हमारी ओर तेरे प्रेम के कारण ही तू ने हमसे यह वायदा किया है कि तू हमारे पापों को स्मरण नही रखेगा । इसके लिए हम तेरी आराधना करते हैं ।

पवित्रता : हे पवित्र पिता, तू ने सारी सृष्टि और मनुष्य की रचना सिद्ध पवित्रता में की है । हममें पाप के प्रवेश के बाद हम सभी पापी बन गए । तेरी पवित्रता के द्वारा तू हमें फिर से बना रहा है । केवल इसलिए कि तू पवित्र है, स्वर्गदूतों की सारी सेना तेरी आराधना करती है और वे तेरी पवित्रता की स्तुति करते हैं । तू हमें शुद्ध करेगा और हमें पवित्र करेगा और सदा के हमें अपनी उपस्थिति में रखेगा । इसलिए हम तेरी स्तुति करते हैं ।

सर्वशक्तिमान : हे सर्वशक्तिमान पिता, तू सब कुछ कर सकता है परन्तु पाप नही कर सकता । तू हमारे लिए सबकुछ कर सकता है, चाहे वह कितना ही कठिन या असम्भव ही क्यों न हो । तू हमारी इच्छाओं को तृप्त करने में सक्षम है । जब कभी हमने अपनी गिरी हुई अवस्था में तुझ से यह प्रार्थना की कि हमें उठा, तू

ने निश्चय ही वेसा ही किया । उसके लिए हम तेरी आराधना करते हैं ।

सर्वज्ञानी परमेश्वर : हे सर्वज्ञानी परमेश्वर, तू ने स्वर्गदूतों, मनुष्यों और सभी प्राणियों को अपना ज्ञान और आपनी बुद्धि दी है । केवल उसी ज्ञान के कारण ही मनुष्य इस सृष्टि के भेदों को जान सकता है । अपने बल या अपनी बुद्धि से चाहे में कुछ भी हासिल करने की कोशिश करूँ, मैं उसे हासिल नही कर पाऊँगा । तू अपनी सर्वज्ञानी बुद्धि से लेगा कि मैं अपनी मूर्खता में चाहे कुछ भी हासिल करने की कोशिश करूँ, मैं उसे हासिल नही कर पाऊँगा बल्कि अपने आप को चोट लगवा लूंगा । यह मेरी समझ से पेर है और यह तेरी असीम बुद्धि के दायरे में है । जब हम बाइबल के किसी हिस्से को नही समझते । तो हम अपने आप से प्रश्न पूछ पूछ कर बेकार में तंग होते रहेंगे । यदि अपनी समझ का सहारा लेने की बजाय, यदि हम ईमानदारी से तूझ से पूछें, तू निश्चय ही उसमें छिपे हुए सत्य को उजागर करेगा । उसके लिए हम तेरा आदर करते हैं ।

एक उदाहरण : एक बार मैं उन लोगों के बारे में सोचकर बहुत उदास हुआ तो जो अपने जीवन में एक बार भी सुसमाचार सुनें बिना ही मर गए, तो मैंने प्रभु से उनके बारे में पूछा । प्रभु ने उत्तर

दिया, ''मैनें अधोलोक (उद्धार नही पाई हुई आत्माओं का निवास स्थान) मैनें बाइबल की शिक्षा दी है और प्रचार किया है'' तब मैंने खुशी से यह कहा कि, ''पिता अब यह स्पष्ट है'' । तब मुझे खुशी हुई और मैंने प्रभु की स्तुति की ।

<u>जीवन :</u> हे जीवन के प्रभु, हम जानते हैं कि तू जीवन से भरपूर है, और इसलिए तू सारे ब्रह्माण्ड में हमेशा से सक्रिय रहा है । जब हममें तेरा जीवन क्रियाहीन हो जाता है, तू जीवनदायक आत्मा के द्वारा हमें फिर से जागृत करता है, जिससे मैं और मेरी प्रार्थना, जीवन और महत्व से भरपूर हो जाती है । यदि मौत भी आ जाए तो भी यह मौत नही है, परन्तु इसे नए जीवन के रूप में देखा जाता है । इस धन्य गुण के लिए हम तेरी आराधना करते हैं ।

* * *

परमेश्वर के आलौकिक गुणों के लिए उसकी स्तुति करना

१. हे परमेश्वर, तू असीमित है, तुझे किसी दूसरे ने नही रचा है और तू अनन्त है और स्वंय ही आस्तित्व में आया है । इसलिए हम तेरी धन्यवाद करते हैं ।

२. हे परमेश्वर, तू ज्योति है, इसलिए तूने सूर्य, चन्द्रमा और तारागणों को बनाया और उन्हें प्रकाश दिया । तूने सभी प्राणियों की आंखों में रोशनी दी ताकि वे सबकुछ देख सकें इसलिए हम तेरी स्तुति करते हैं ।

३. हे परमेश्वर, तू बुद्धि और ज्ञान है, इसलिए तुने स्वर्गदूतों की सेनाओं, मनुष्यों और सभी प्राणियों में बुद्धि और ज्ञान डाला है । उसी बुद्धि के कारण ही अनगिनत भेदों को ढूँडा और समझाया जा रहा है । तू हमारे ज्ञान में प्रकट किया गया है । तू हमारे ज्ञान में प्रकट किया गया है । इसलिए हम तूझे आपनी स्तुति अर्पित करते हैं ।

४. हे परमेश्वर, तू प्रेम है । सभी प्राणी एक दूसरे से प्रेम करते हैं, उसी प्रकार मनुष्य भी एक दूसरे से प्रेम करते हैं । इसलिए हम तेरी स्तुति करते हैं ।

५. हे परमेश्वर, तू धर्मी परमेश्वर है । इसलिए तू हमें क्षमा करता है उसके बावजूद भी तू गलती करने वाले लोगों को दण्ड देगा और तू उन्हें क्षमा भी करेगा । इसलिए हम तेरा आदर करते हैं ।

६. हे परमेश्वर, तू पवित्र है, हालाँकि संसार में पाप है, लेकिन फिर भ यहां पवित्रता भी बनी रहती है । वर्षा के पानी

और फलों में शुद्धता रहती है । हालाँकि मनुष्यों में पाप रहता है, लेकिन उनमें पवित्रता भी रहती है । इसलिए हम तेरा आदर करते है ।

७. हे परमेश्वर, तू सामर्थ है । इसलिए तू ने मनुष्यों और सब प्राणियों को भी सामर्थ दी है ताकि वे चल-फिर सकें और काम कर सकें । इसके लिए हम तूझे हार्दिक स्तुति अर्पित करते हैं ।

८. हे परमेश्वर, तू सर्वव्यापी परमेश्वर है, इसलिए हर जगह तेरा आदर बना रहता है, जिसमें, प्रेम, जीवन, पवित्रता, तेरी कारीगिरी और तेरी सुरक्षा शामिल है । इसलिए हम तेरा धन्यवाद करते हैं ।

९. हे परमेश्वर, तू निराकार है । इसलिए तू अदृश्य है । हालाँकि तू दिखाई देने वाला परमेश्वर नही है, फिर भी तू कुछ लोगों को दर्शनों और कुछ लोगों को स्वप्नों में प्रकट होता है । इसके लिए हम तेरा हार्दिक धन्यवाद करते हैं ।

१०. हे परमेश्वर, तू राजाधिराज है । तू एकमात्र ईश्वर है । तूझे दूसरों से सुझावें की आवश्यकता नही है । इसलिए तू सबकुछ स्वंय ही करता है । इसके लिए हम तेरा धन्यवाद करते हैं ।

हे परमेश्वर, तू ने अपने आलौकिक गुण अपने स्वर्गदूतों को और साथ ही साथ मनुष्यों को भी दिए हैं । इसके लिए हम तूझे स्तुति अर्पित करते हैं । एक स्वर्गदूत ने अपने पतन के बाद तेंरे इन आलौकिक गुणों को खो दिया । उसकी तरह, मनुष्यजाती ने भी पाप में गिरने के बाद तेंरे इन लगभग सभी आलौकिक गुणों का खो दिया । लेकिन फिर भी तू उनकी ओर धीरज धरे हुए है । इसलिए हम तेरी स्तुति करते हैं । हे परमेश्वर, तू अपनी दक्षता उन लोगों में डालता है जो तुझ से प्रार्थना करते हैं । इसके लिए हम तूझे धन्य कहते हैं । हे परमेश्वर, तूने अपने प्रिय बेटे प्रभु यीशु मसीह को इस जगत में भेजा और उसमें तूने अपने गुणों को प्रकट किया । इसके लिए हम तेरा हार्दिक धन्यवाद करते हैं । हे परमेश्वर, यदि हम सारी सृष्टि को जांचे और उस पर ध्यान दें, तो हम आसानी से तेंरे गुणों को उसमें इस्तमाल कर सकते हैं । इसलिए हम तेरी स्तुति करते हैं । और हे परमेश्वर, विश्वासियों में से बुरे स्वभाव को निकालने के बाद, तू उन्हें स्वर्ग में लेकर जा रहा है । वहाँ वे तेंरे महान गुणों का आनन्द उठा रहे हैं । इसलिए हम अपनी गंभीर और शुद्ध स्तुति अर्पित करते हैं ।

* * *

परमेश्वर के आलौकिक गुणों के लिए उसकी स्तुति करना

(चौथा भाग-उपवास और प्रार्थना के सत्र में उपयोगी)

१. हे परमेश्वर, अनन्त परमेश्वर, हम तेरी नाम को धन्य कहते हैं । तेरी रचना किसी ने नही की बल्कि तू स्वंय ही अस्तित्व में रहा है । तेरे इस महान गुण के लिए, जो सारी सृष्टि से भी कहीं ऊपर है, हम तेरी स्तुति करते हैं ।

२. हे अनन्त परमेश्वर, हम सदा अपनी स्तुति तेरे लिए अर्पित करते हैं क्योंकि तू अनन्त परमेश्वर है ।

३. हे परमेश्वर, तू निराकार है, इसलिए महिमा सदा तुझे मिले । पापी लोग अपने पापमय स्वभाव के कारण तुझे देख नही पाते । हालाँकि तू अदृश्य है लेकिन फिर भी तू हम सभी का देख सकता है, इ अद्भूत महिमा के लिए तेरी स्तुति करते हैं । हालाँकि तू अदृश्य परमेश्वर है लेकिन फिर भी तू कुछ लोगों पर स्वप्नों में और कुछ को दर्शन देकर अपने आप को प्रकट करता रहता है, और इसके लिए हम तेरे नाम की महिमा करते हैं । हालाँकि तू

निराकार और अदृश्य है, लेकिन तूने हमें एक दृश्य शरीर में आकार दिया है जो हमारे लिए बहुत उपयोगी है । तेरी इस महानता के लिए हम तेरी स्तुति करते हैं । यहां तक कि तूने हमारी आत्मा को अपने स्वरूप में अदृश्य बनाया है । इसलिए मैं अपनी अदृश्य आत्मा और दृश्य शरीर के द्वारा तेरी आराधना करता हूँ ।

४. हे जीवन के परमेश्वर, हमारे अस्तित्व का स्त्रोत तू ही है । परन्तु, जब हम अपनी निर्बलताओं के कारण जीवनहीन हो जाते हैं, तो तू अपनी जीवन हममें उण्डेलने के द्वारा हमें फिर से जागृत करता है । इसलिए हे अनन्त जीवनदायक परमेश्वर हम तेरी आराधना करते हैं ।

५. हे परमेश्वर, तू शक्तिशाली है । शक्ति और सामर्थ तेरी ही है । इसी कारण तू सभी मनुष्यों और प्राणीयों को बल प्रदान करता है और तेरे इस वरदान के कारण वे अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए काम और चलन कर सकते हैं । तेरी इस भलाई के कारण तेरा नाम हमेशा महिमा पाए । जब मैं याद करता हूँ कि किस प्रकार तूने हमारी प्रगति की और अपने बल के द्वारा हमारी सुरक्षा की है, तो हम तेरे इस बल के कारण तेरी महिमा करते हैं । हालाँकि

जब हम अपने बल में कोई काम पूरा नही कर पाते, तो तू अपने बल से उसे पूरा कर देता है । इसलिए हम अपने सारे बल से तेरी स्तुति करते हैं ।

६. हे परमेश्वर, जिसमें बुद्धि और ज्ञान के सारे खजाने छिपे हुए हैं, तूने सभी स्वर्गदूतों, मनुष्यों और अपनी सृष्टि के सारे प्राणियों को वह बुद्धि और ज्ञान प्रदान किया । इस वरदान के द्वारा, हम कई भेदों को समझ पा रहे हैं । तेरी महिमा हो । आगे यह कि हमारी जरूरतों को और इच्छाओं को प्रार्थना में तुझे बताने से पहले ही तू उन्हें अच्छी तरह जानता है, इसलिए तू हमारी सारी जरूरतों को पूरा करने के लिए तैयार है । तू हमारे सामने आने वाली सारी मुसीबतों को हटाने में निर्पुण और बुद्धिमान है । तू हमारी समस्याओं का समाधान करने के लिए पर्याप्त बुद्धिमान है । हम अंगीकार करते हैं कि हम अपने सीमित ज्ञान के द्वारा कभी भी तेरे अनन्त ज्ञान और बुद्धि को समझ नही पाएंगे और फिर भी हम अपने इस सारे सीमित ज्ञान के साथ तेरी महिमा करते हैं ।

७. हे हमारे पवित्र पिता, सदा तेरा आदर होता रहे, क्योंकि तूने मुझे और अपनी सारी सृष्टि को पवित्र अवस्था में रचा

है । परन्तु पाप के प्रवेश के कारण में और सारी सृष्टि अशुद्ध हो गई,फिर भी तू अपनी पवित्रता के द्वारा हमें शुद्ध और पवित्र बनाने में सक्षम है । इसलिए हम अपने शुद्ध मनों और हृदयों के साथ तेरे नाम का आदर करते हैं ।

८. हे हमारा प्रेमी पिता, हम तेरी दयालूता के लिए तेरी महिमा करते हैं, हम आनन्दित होकर तेरे वरदानों, हमारी निर्बलताओं के प्रति तेरे धीरज, हमारे प्रतिदिन के जीवन में तेरे मार्गदर्शन और हमारे दुखों को कम करने के लिए तेरे कामों और तेरे द्वारा किए गए उपयोगी कामों के द्वारा हम अपनी ओर तेरे प्रेम को पहचानते हैं और तेरी स्तुति करते हैं । फिर भी हम यह अंगीकार करते हैं कि हमारी ओर तेरे भरपूर प्रेम की तुलना में हमारी यह स्तुति पर्याप्त नही है । हम उस खिाचाव को जानते हैं जिसके द्वारा सभी प्राणी उनके अपनों को प्यार करते हैं, और हम उस खिंचाव को भी जानते हैं जिसके द्वारा सभी मनुष्य उनके अपनों का प्यार करते हैं, और हम अपने माता पिता के प्यार को भी जानते हैं, जिसके द्वारा वे अपने बच्चों से प्रेम करते हैं । परन्तु हमारी ओर तेरा प्यार इन सब खिंचावों से कही अधिक बढ़कर है । इसलिए मैं खुशी अपने सारे हृदय से

अपने प्रेम का तेरे लिए अर्पित करता हूँ ।

९. हे हमारे धर्मी परमेश्वर, तेरा इन्साफ मनुष्यों के सर्वोत्तम न्याय से कहीं बढ़कर है । जब मैं गत होता हूँ तो धर्मी न्याय के अनुसार मुझे डांटता है और मुझे दण्ड देता और सुधारता है । इसलिए तेरे धर्मी इन्साफ का ध्यान में रखते हुए मैं अपने सारे हृदय और मन से तेरा आदर करता हूँ ।

१०. हे हमारे सर्वप्यापी पिता, हम तेरे इस गुण के लिए, कि तू स्वर्ग और पृथ्वी पर उपस्थित है, तेरी आराधना करते हैं, जब कभी और जहाँ कहीं मैं जाऊँ, तू हमेशा मेरी सुरक्षा, सहायता और मदद के लिए उपलब्ध रहता है, तू मुझे अकेलेपन के भय से मुक्त रखने में सक्षम है । इसलिए मैं अपने सारे मन और हृदय से अपनी हार्दिक स्तुति अर्पित करता हूँ ।

११. हे परमेश्वर, आजाद और मुक्त परमेश्वर, तू सब कुछ अपने आप और बिना किसी की सहायता के करने में सक्षम है, इसके लिए हम तेरी महिमा करते हैं । तुझे कभी किसी के सुझाव की आवश्वकता नही पड़ती । सबकुछ अपनी योजना और अपनी इच्छा के अनुसार सिद्धता में पूरा करने की तेरी महानता के लिए हम तेरी महिमा करते हैं,

और कोई भी तुझे तेरे उद्देश्यों को पूरा करने से नही रोक सकता । तुझ पर निर्भर रहने के द्वारा हमें हमारे काम पूरे करने की इस आजादी के द्वारा तूने अपना प्रेम प्रकट किया है । तेरे इस वरदान के लिए हम तेरी आराधना करते हैं ।

१२. हे परमेश्वर, तू स्वंय ज्योति है, हम जानते हैं कि तुने सूर्य, चन्द्रमा और तारांगण की रचना की है और उन्हें प्रकाशमान किया है । तूने ही सभी प्राणियों की आंखें में भी देखने की ज्याति डाली है । इसलिए हम तेरा आदर करते हैं और तेरी महानता की महिमा करते हैं ।

१३. हे प्रभु, मैं तेरी स्तुति करता हूँ कि तेरा आदर करने के लिए तुने मुझे एक शरीर दिया है । हालाँकि यह शरीर अभी तेरा आदर करने के लिए अयोग्य है, तू इसे एक पवित्र देह में रूपांतरित कर दे और अंत में अपनी उपस्थिति में ले जाने के लिए मुझे एक महिमामय शरीर दे । हम तेरी स्तुति करते हैं ।

१४. हे प्रभु, सभी वरदानों के दाता, हम अपनी आभारी आराधना अर्पित करते हैं क्योंकि तू ने स्वर्गदूतों और मनुष्यों को अपने आलौकिक गुण दिए हैं, और हम विभिन्न प्राणियों में

भी तेरे इन महान गुणों को देखते हैं, जिससे तेरा स्वभाव, व्यक्तित्व और महानता प्रकट होती है । इसलिए हम दीन होकर तेरी अराधना करते हैं, केवल तू ही सदा सारी महिमा, आदर और सामर्थ के योग्य है, आमीन ।

* * *

परमेश्वर के आलौकिक गुणों के लिए उसकी स्तुति करना (धन्यवाद सभाओं के लिए स्तुति)

क) धन्यवाद :

१. हे महिमामय परमेश्वर, हमारे पैदा होने से पहले और हमारी माता के गर्भ में हमारी रचना होने से पहले, हमारे जीवन के बारे में सबकुछ तेरी पुस्तक में लिखा हुआ है । इससे तेरा प्रेम, बुद्धि और हमारे लिए तेरी देखभाल प्रकट होती है । इसलिए हम तेरे इन गुणों के लिए तेरा धन्यवाद करते हैं जो हमारे लाभों के लिए कार्यरत हैं ।

२. हमारे जन्म के बाद, जब हम बहुत छोटे ही हैं, तू जानता है कि हम अपनी देखभाल नही कर सकते इसलिए तुने यह

जिम्मेदारी हमारे माता पिता को सौंपी है । इसलिए हमारी सुरक्षा के लिए तेरी इस चिन्ता के लिए, जो तेरे अनुग्रह का बुनियादी भाग है, हम तेरे लिए अपना धन्यवाद अर्पित परते हैं ।

३. हे परमेश्वर, जब हमने अपने भोजन के लिए तुझ से प्रार्थना भी नही की, तब भी तुने दूध और भोजन के द्वारा हमारा पालन-पोषण किया है । तेरा यह प्रयोजन हमें तेरे पितृत्व के प्रेम को याद दिलाता है । तेरे इस प्रेम के लिए हम अपना हार्दिक धन्यवाद अर्पित करते हैं ।

४. हे परमेश्वर, हमारे स्त्रोत, हमारे भोजन के लिए प्रार्थना किए बिना ही तूने हमें पौष्टिक भोजन के साथ साथ बहुत सारे स्वादिष्ट भोजन भी खिलाए हैं । इसके लिए तेरा हार्दिक धन्यवाद देते हैं ।

५. हे परमेश्वर, सब वस्तुओं के प्रयोजन करने वाले और सब प्राणियों को भोजन खिलाने वाले, हम तेरी करूणा और जरूरतमंदों की जरूरत को पूरा करने के स्वभाव को समझकर आनन्दित होते हैं । सारी सृष्टि तेरी भलाई की स्तुति करे ।

६. हे परमेश्वर, हमारे बिना मांगे ही, तुने हमारे लिए अच्छे कपडों का प्रयोजन किया है जिसके लिए हम तेरा धन्यवाद करते हैं । इसके साथ साथ तू हमारे हाथों के कामों को आशीष देता है और उन्नति की आशीष देता है । इसलिए हम अपने सारे हृदय से तेरा आदर करते हैं ।

७. हे परमेश्वर, सारे ज्ञान और बुद्धि के स्त्रोत, हमारी पढ़ाई के लिए तुने जो बुद्धि और ज्ञान हमें दिया है उसके द्वारा हम तेरे ज्ञान के वरदान को पहचानते हैं । हमारी ओर तेरी भलाई के लिए हम तेरा धन्यवाद करते हैं ।

८. हे परमेश्वर, हमें दिए गए अच्छे शिक्षकों, अच्छे मित्रों, और सहपाठियों के लिए, जो हमारे साथ खेलते हैं और हमारी मदद करते हैं, हम तेरा धन्यवाद करते हैं ।

९. हे परमेश्वर, हमारी जीविका चलाने और काम करने के द्वारा पैसा कमाने की तेरी आशीष के लिए हम तेरे आभारी हैं और हम तेरा धन्यवाद करते हैं ।

१०. हमारी अगुवाई करने के लिए तूने जो अच्छा अगुवे दिए, हमारे देश को चलाने के लिए बुद्धिमान व्यक्ति दिए और ईमानदारी और धार्मिकता से जीवन बिताने के लिए हमारी

सहायता करने के लिए तूने जो अच्छे लोग दिए, उनके लिए हम तेरा धन्यवाद करते हैं । यह जानते हुए कि उनका यह सारा अधिकार और बुद्धि तेरी ओर से मिला हुआ वरदान है, हे प्रभु और राजा, हम तेरा धन्यवाद करते हैं ।

११. हमारी सारी जरूरतों को पूरा करने के लिए दिए गए अच्छे अगुवों, एल्डरों, माता पिता, भाईयों और बहनों के लिए हम तेरा धन्यवाद करते हैं । तेरे प्रेम को समझने के लिए तूने हमें एक घर प्रदान किया है, जिसके लिए हम तेरा हार्दिक धन्यवाद करते हैं ।

१२. हे पिता हमारे आनन्द को पूरा करने के लिए, तुने हमें मित्र और सम्बन्धी दिए हैं । सबसे बढ़कर तूने हमें मित्र और सम्बन्धी दिए हैं । उन सबसे बढ़कर तू हमारा सबसे मित्र और प्रिय सम्बन्धी है । इसलिए अलग अलग लोगों के द्वारा तू जो हमारी सहायता करता है, उसके लिए हम तेरी आराधना करते हैं ।

१३. हे हमारे अच्छे चरवाहे, जो हमारी आत्मिक उन्नति के लिए है, हम सभी प्रचारकों, पासबानों और मिशनरियों, जो तुने अपनी देह, कलीसिया में दिए हैं, के लिए तेरा हार्दिक धन्यवाद करते हैं ।

इसलिए तेरे संतों की सारी मण्डली के साथ हम अपने परमेश्वर, जो सिहांसन पर विराजमान है और सदा सदा के लिए जीवित है, को महिमा, आदर और धन्यवाद देते हैं । आमीन ।

ख) स्तुति (नहेम्याह 9:5-6)

१. हे परमेश्वर, तू जो प्रेम है, हम तेरी स्तुति करते हैं क्योंकि हमारी निर्बलताओं के बावजूद भी तू हमसे प्रेम करता है ।

२. हे हमारे सामर्थी परमेश्वर, हमें यह भरोसा है कि प्रत्येक परिस्थिति में, चाहे यह हमारा लिए कितनी भी कठिन क्यों न हो, तू हमारी सहायता करता है । इसलिए हम अपने सारे बल से तेरा आदर करते हैं ।

३. सबसे पवित्र परमेश्वर, तू ने सबकुछ और सभी को पवित्र अवस्था में रचा है । जब मनुष्य पाप के कारण अशुद्ध हो गया, हमें फिर से पवित्र बनाने के लिए तू ने क्रुस पर अपना जीवन बलदान कर दिया । इसलिए तेरी पवित्रता और धार्मिकता के लिए हम तेरी आराधना करते हैं ।

४. हे हमारे जीवन के परमेश्वर, अनन्त परमेश्वर, तूने हम मिट्टी के बर्तनों में अपने अत्मा के द्वारा जो जीवन का वरदान दिया है उसके लिए हम तेरा आदर करते हैं ।

५. हे हमारे सर्वव्यापी परमेश्वर, हम तेरे नाम की महिमा करते हैं क्योंकि जब कभी हमें जरूरत पड़े तू हमेशा हमारे साथ रहता है ।

६. हे हमारे अनन्त परमेश्वर, हमारे लाभों के लिए तेरे आलौकिक गुणों की कोई सीमा नही है । इसलिए हम तेरे उत्तम नाम की महिमा करते हैं ।

हे प्रभु, तू सभी से और हर जगह से और सदा सदा के लिए युगानुयुग तक सारी सामर्थ, धन, बुद्धि, शक्ति, आदर, महिमा और आशीषों पाने के योग्य है । अपनी महिमा के लिए हमारी स्तुति को ग्रहण कर । आमीन ।

* * *

शैतान का सिर काटे जाने के लिए

१. प्रधान दूतों के मुखिया-लुसीफर-ने एक अत्यधिक बेहूदा विचार सोचा कि वह परमेश्वर के तुल्य है । यह दुष्ट विचार उसी-शैतान में से निकला था ।

२. परमेश्वर की आलौकिक योजना को बिगाड़ने के लिए शैतान ने हव्वा को बड़ी धूर्तता से बहकाया कि वह

परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करे । यह बुराई भी शैतान में से ही निकली थी ।

३. आदम और हव्वा को परमेश्वर का आज्ञा उल्लंघन करने के कारण परमेश्वर के क्रोध का सामना करने की परिस्थिति में पहुंचाने की दुष्ट योजना भी शैतान की ही थी ।

४. बहुत बार और अलग अलग स्थानों में शैतान हमारे सामने प्रलोभन लाता है ताकि हम पाप में गिरें । हमें इस बात की समझ है कि ये सब दुष्ट विचार शैतान के सिर में से ही निकलते हैं ।

५. जब भी हम अपने मन में परमेश्वर की दस आज्ञाओं को याद करते हैं, तो हमारे सामने यह प्रलोभन आता है कि हम सांसारिक सुखों, जैसे कि शरीर की अभिलाषा, आँखों की अभिलाषा, की खातिर इन आज्ञाओं का उल्लंघन करें । यह भी शैतान के सिर का ही काम है ।

६. शैतान ने कुछ लोगों के मन में यह घिनौना विचार भर दिया है कि कोई परमेश्वर है हि नही, और इसी कारण वे नास्तिक बन गए हैं । यह घिनौना विचार भी शैतान के सिर में से ही पैदा हुआ है ।

७. एक विश्वासी परमेश्वर की अपार दया के लिए उसका धन्यवाद करने के लिए तैयार होता है । परन्तु शैतान उसके मन में घुसकर उसे ऐसा करने से रोकता है । तब विश्वासी बहुत कठिनाईयों का सामना करता हैं । शैतान ही है जो विश्वासीयों के मनों में परमेश्वर के प्रति अविश्वास और संदेह भरता है । और अधिक बुरा तो तब होता है, कि यदि यह विश्वासी अपने एकलैते बेटे को खो दे - एक ऐसा नुकसान जिसे वह सह नही सकता । उसका धीरज टूटने की कगार पर आ जाता है । इस तनावग्रस्त दशा में वह परमेश्वर की स्तुति कैसे करेगा । विश्वासी के जीवन में होने वाले प्रत्येक आत्मिक नुकसान के लिए शैतान ही जिम्मेदार है ।

८. कुछ लोग सोचते हैं, और जो सोचते हैं वे गलत सोचते हैं कि वे चर्च जाने की बजाय घर पर अकेले बैठकर ही परमेश्वर की आराधना उत्तम तरीके से कर सकते हैं । यह बुरा विचार भी शैतान के सिर में से ही निकलता है ।

९. विद्यार्थियों का एक समूह कहता है कि वे अपने अपने माता-पिता का आदर क्यों करें, चाहे वे कितने ही बुजुर्ग और सम्मानजनक क्यों न हों । ऐसा निरादरयुक्त विचार

भी शैतान के सिर ही की रचना है ।

१०. दूसरों के साथ दुर्व्यवहार करना, दूसरों के खिलाफ शारीरिक बल उपयोग करना, हत्या करना - ये सब बुरे गुण शैतान ही की ओर से आते हैं ।

११. सभी बुरी भावनाएं, पारिवारिक झगड़े, खतरें और सभी प्रकार के पाप शैतान के सिर में से निकलते हैं ।

१२. जब किसी को भूख लगती है तो उसे लगता है कि किसी के घर में घुसकर जो कुछ भी उसे मिले उसे खा लेना गलत नही है । इस प्रकार कुछ लोग चोरी करते है । ये काम शैतान के द्वारा डाले गए दुष्ट विचारों का नतीजा है ।

१३. कुछ लोगों का स्वभाव होता है कि वे दुसरों को परेशान करते रहते हैं और उनकी गल्तियों को सबको सामने उजागर करते रहते हैं । ऐसी धूर्तता भी शैतान के सिर से जुड़ी हुई है । सभी प्रकार के झूठ शैतान के द्वारा ही उकसाए जाते है ।

१४. दस आज्ञाओं की उल्लंघना के आलावा बाइबल में लिखे गए बाकी सभी अपराध शैतान के दुष्ट प्रभाव का ही नतीजा हैं ।

१५. बाइबल में लिखे हुए अपराधों के अलावा संसार में पाए जानेवाले बाकी विचित्र पाप शैतान के चालबाज सिर के ही आविष्कार हैं ।

१६. परमेश्वर के राज्य की बढौतरी में जितनी भी रूकावटें खड़ी हुई हैं, वे सब शैतान के दुष्ट सिर का ही परणिाम हैं ।

१७. मसीह की कलीसिया के लोगों में अविश्वास और संदेह पैदा करने के लिए जिम्मेदार, भाईयों पर दोष लगाने वाला- परमेश्वर और मनुष्य का घोर शत्रु ही है । यह सब बुराई जड़ शैतान का सिर ही हैं ।

१८. हमें पापों से मुक्त करके, उद्धार पाकर, मसीह के दूसरे आगमन के लिए तैयार रहने की आवश्यकता है । परन्तु शैतान लोगों के मनों में यह बात डालता है कि ये तीनों बातें विभ्रांदियाँ हैं । ये मूर्खतापूर्ण विचार शैतान के सिर में से ही निकलते हैं ।

१९. ऐसा कहना कि स्वर्ग, नरक या अधोलोक है ही नही, परमेश्वर का निरादर करना है । यह बुराई भी शैतान के सिर का ही परणिाम है ।

२०. इसके आलावा यह कहना कि पाप की अलग अलग

श्रेणियां होती हैं, पाप की गम्भीरता को नजरअंदाज करना है और यह खतरा भी शैतान के सिर ही की उपज है ।

२१. ऐसी झूठी शिक्षा कि शैतान और उसकी दुष्टात्माएं तो है ही नही, शैतान का शरारत भरा काम है ।

२२. ऊपर लिखे गए शैतान के दुष्ट विचारों के अलावा और भी दुष्ट विचार पाए जाते हैं, उदाहरण के लिए, चुगलियाँ सुनने के लिए कान लगाना, आँखों की अभलिाषा, बल-प्रयोग, झगड़ा और हाथों एवं पावों के द्वारा अन्य अनैतिक कार्य-से सब बातें शैतान के सिर में से ही प्रेरणा पाती हैं ।

२३. उपरोक्त लिखित सभी बुराईयाँ और दुष्ट काम मिलकर शैतान के सिर का निर्माण करती हैं, हालाँकि हमारी तरह उसका कोई रूप या सिर नही है । वह एक आत्मिक प्राणी है । सभी बुरे विचार उसी में से पनपते हैं ।

२४. इसीलिए मसीह के प्रत्येक अनुयायी के लिए परमेश्वर से यह प्रार्थना करना अनिवार्य है कि इस भयानक शैतान को दोषी करार दिया जाए और उसका सिर काट दिया जाए ।

आगे आनेवाले अध्याय शैतान को डाँटने और विश्वासी के लिए जयवंत मसीही जीवन जीने के लिए सूक्तियाँ बताते हैं ।

✻ ✻ ✻

प्रभु से प्रार्थनाएं और शैतान को फटकार

१. प्रभु से आरम्भिक प्रार्थना :

हे परमेश्वर पिता, त्रिएक, आपकी पवित्र पुस्तक में लिखा है कि हमें शैतान का सामना करना है । अब आपकी उपस्थिति की सहायता और आपके बल से हम उसका सामना करते हैं । अब हम यह घोषणा करते हैं कि शैतान वेदना और शक्तिहीनता का शिकार हो जाए और परमेश्वर का नाम महिमा पाए और उसकी कलीसिया जयवंत हो ।

हे दयालु पिता, सर्वशक्तिमान परमेश्वर, शैतान का सामाना करने के लिए हमें अपना बल दे । आपने हमें शत्रु पर विजयी होने का अधिकार दिया है (लूका १०:१९) इसलिए हम विनती करते हैं कि हे पिता, उस अधिकार का उपयोग करने का अनुग्रह हमें दे। यीशु के नाम में हम प्रार्थना मांगते हैं, आमीन ।

शैतान और उसकी दुष्टता की सेना को फटकार लगाना आरम्भ करना ।

अब तारे ब्रह्माण्ड को रचने वाले पिता के नाम से, सारी मनुष्यजाति के उद्धारकर्ता प्रभु यीशु के धन्य नाम से और हमें सांत्वना एवं प्रोत्साहन देने वाले और पवित्र कलीसिया को तैयार करने वाले

पवित्र आत्मा के नाम से, और त्रिएक परमेश्वर के नाम से हे शैतान हम तेरा और तेरी सेना का सामना करते हैं । हे अधोलोक मे बन्धी हुई और आकाशमण्डल में आजाद दुष्टात्माओं, हे दुष्टात्माओं की सेनाओ, हम मजबूती से तुम्हारा सामना करते हैं, और त्रिएक परमेश्वर के नाम से तुम्हें डाँटते हैं, और तुम्हें आज्ञा देते हैं कि हमारी फटकार के अनुसार करो ।

१. प्रभु से यह प्रार्थना करना कि हमारे बदले में वह शैतान का सामना करे ।

हे प्रभु यीशु, आपने उस उजाड़ हलाके में शैतान का यह कहते हुए डाँटा कि ''है शैतान, दूर हट'' (मत्ती ४:१०) क्या वह वहां कुछ देर और रूका ? वह कैसे रूक सकता था ? इसलिए हे प्रभु, हमें यह अनुग्रह दे कि हम भी उसके खिलाफ इन्ही वचनों का उपयोग करें ताकि वह डर कर भाग जाए । हे प्रभु यीशु, हमारी प्रार्थना सुन ।

* * *

शैतान का डाँटना और फटकारना (१)

१. हे शैतान, हम जानते हैं कि इस संसार में चारों ओर मनुष्यों आर जीव जन्तुओं में हमारे शत्रु पाए जाते हैं, परन्तु तू उन सबसे बुरा है । इस कारण और इसके बावजूद परमेश्वर ने हमें तुझ पर सारा अधिकार और सामर्थ दी है । उस अधिकार के कारण हम तेरे खिलाफ जो कुछ भी चाहें कर सकते हैं (लूका १०:१९)

२. हे शैतान, तू चाहे हमें कितना ही बड़ा पापी क्यों न बना दे, हम तेरी तरह शैतान नही कहलाएंगे । तब भी हमें शैतान नही बल्कि इन्सान ही कहा जाएगा । तू चाहे कितनी भी कोशिश कर ले, तू पवित्र स्वर्गदूत कभी नही बन सकता । सुसमाचारों में हमारे प्रभु यीशु ने कहा है कि चाहे हम पापी ही क्यों न हों, क्रुस पर बहे हुए उसके लहू के कारण हम पवित्र स्वर्गदूतों के समान बन सकते है (मत्ती २२:३०; लूका २०:३६) । तूझे उनके समान कहलोन का अवसर कभी नही मिलेगा । इस कारण हम तुझ से बेहतर हैं । इसलिए तुझे हमारे पास से भाग जाना होगा ।

३. हे शैतान, हमारे प्रभु ने तुझे यह कहकर डाँटा कि ''हे शैतान, दूर हट'' (मत्ती ४:१०) । जब तुने पतरस में एक दुष्ट विचार डालने की कोशिश की थी तब भी प्रभु ने तुझे डाँटा था, प्रभु यीशु ने यह नही कहा कि ''हे पतरस'', बल्कि उसने कहा कि ''हे शैतान'' । क्या इन दोनों में कोई भिन्नता है ? पहली घटना में शैतान ने बाहरी तौर पर प्रभु के सामने प्रलोभन रखा, परन्तु दूसरी घटना में उसने पतरस के अन्दर वह विचार डाला था । इसी कारण हमारे प्रभु ने ''हे शैतान'' कहा था ''हे पतरस'' नही । इसलिए जब तू विभिन्न प्रकार से हमारे सामने प्रलोभन लाता है तो हम तुझी को डाँटते हैं ।

४. हे शैतान इफिसियों ६:१० में लिखा है ''प्रभु और उसकी सामर्थ की शक्ति में बलवान बनो'' इसलिए चाहे हम तुझे डाँटे, तुझे फटकार लागाएं या तेरे गढ़ों को ढ़ाएं, यह सब हम प्रभु की सामर्थ से करते हैं । इसलिए हमारी इच्छाएं निश्चय ही पूरी होंगी और तेरी दुष्ट योजनाएं हमेशा विफल होंगी ।

५. हे शैतान, तुेन हमारे प्रभु से कहा, ''तू परमेश्वर का पवित्र जन है'' (लूका ४:३४, ३५) परन्तु प्रभु ने तुझे डाँट कर

चुप हो जाने के लिए कहा । उसी प्रकार, चाहे तू कुछ भला कहे या बुरा, हम तुझे आज्ञा देते हैं कि तू अपना मुँह बन्द रख । हमें हमारे प्रभु ने अधिकार दिया है । हमारा प्रभु निश्चय ही पवित्र है । जो कुछ तुने उससे कहा था वह सच था, परन्तु फिर भी उसने उसका नाम तुझे व्यर्थ में लेने नही दिया (निर्गमन २०:७) उसी प्रकार तू चाहे अच्छी बातें हमारा मनों में में डाले, हम तुझे उसकी अनुमति नही देंगे । तब तु अपने आप में शार्मिन्दा हो जाएगा (उत्पति ३१:२४) ।

६. हे शैतान, हमारे प्रभु ने तुझे यह कहकर डाँटा, ''हे शैतान, मुझ से दूर हट'' (मत्ती १६:२३) तू वहाँ से भाग गया और पीछे भी मुड़कर नही देखा । यदि तू हमारे विचारों, सपनों या दर्शनों मे हमारे सामने आए, तो हम भी उन्हीं शब्दों का उपयोग करेंगे जिनका उपयोग प्रभु यीशु ने किया था । तब तुझे भागना ही पड़ेगा । यदि तू प्रभु से अनुमति लेकर भी हमारे पास आएगा तो हमारे उन शब्दों के कारण तुझे भागना ही पड़ेगा ।

७. हे शैतान, तुने जब हमारा स्वामी प्रभु यीशु मसीह इस धरती पर था तो उसका मुख्य कार्य दुष्टात्माओं का

निकालना था । अब उसने वही काम हमें सौंप दिया है (मत्ती १६:१७) इसलिए हमारा काम तुझे निकाल भागाना है - और तेरा काम भाग जाना है ।

८. हे शैतान, तुने यह कह कर हमें डाराया है कि तू अपनी सेनाएं लेकर हमारे खिलाफ आएगा । क्या हम नही जानते कि यह केवल एक व्यर्थ धमकी है ? हम जानते हैं कि जब हम प्रार्थना करते हैं, तो तू हमारे खिलाफ अपनी सेना भेजेगा । परन्तु ऐसा करके तू अपनी मूर्खता प्रकट करेगा जबकि तू और तेरी सेना निश्चय ही हार जाएंगे और तुम्हें भागना ही पड़ेगा (व्यवस्था २८:७)

९. हे शैतान, क्या प्रभु यीशु के चेलों और संतों ने पहली सीद में सारे संसार के लिए प्रार्थना नही की ? तब तू कहाँ था ? अब तेरे पास क्या अधिकार है कि तू प्रार्थना में हमारे खिलाफ खड़ा हो ? ऐसा करके तू अपने दुष्ट स्वभाव को प्रकट कर रहा है और तुझे यह जानना ही होगा कि तू हमारे कामों को नही रोक सकता ।

१०. हे शैतान, क्या तुने डा. मार्टिन लूथर के द्वारा लिखी गई प्रश्नोत्तरी पढ़ी है ? उसकी तीसरी प्रार्थना में लिखा है कि परमेश्वर की इच्छा को पूरा होने से रोकने में शरीर, संसार

और शैतान रूकावट बनते हैं । इसलिए हम तेरा सामना करते हैं और तुझे डाँटते हैं कि परमेश्वर के कार्य में रूकावट ना बन ।

११. हे शैतान, तू हमारी मण्डलियों के विश्वासियों में झगड़े और फूट पैदा करता रहता है । यदि तूर ऐसा करता रहा, हम अलग अलग स्थानों में जाएंगे और परमेश्वर की उपस्तिति के साथ मण्डलीयाँ स्थापित करेंगे । ऐसा करने से तेरा काम कठिन हो जाएगा और तू हार जाएगा व तेरा उजड़ जाएगा । इसलिए सावधान रह (प्रेरित ८:४)

१२. हे शैतान, जैसे ही सपेरा बीन बजाता है साँप अपनी छीपी हुई जगह से निकल आना है । वह क्यों निकल आता है ? ये केवल उसकी मौत के लिए होता है । उसी प्रकार, हमारी सारी प्रार्थनाएं सुनने के बावजूद भी तू हमारे खिलाफ क्रोध में निकल आता है, क्योंकि तेरा अंत समीप है और तेरे दिन गिने जा चूके हैं, जिसके बारे में तू पूरी तरह जागृत नही है ।

१३. हे शैतान, न तो तू पुरूष है और न ही स्त्री है । जब हम तुझे कभी कभी पुरुषवाची शब्द और कभी कभी स्त्रीवाची शब्द के द्वारा बुलाते हैं तो तेरा मजाका उड़ाते हैं । यह

केवल तुझे शार्मिन्दा करने के लिए है ।

१४. हे शैतान, तूने हमारे शरीरों पर अपने तीर छोडे हैं । तू आत्मिक प्राणी है और हमारी तरह तेरा शारीरिक स्वरूप नही है । परन्तु यह जानते हुए कि अदृश्य होने के बावजूद तेरे पास भी अवयव हैं, हम भी तुझ पर तीर छोड़ते हैं जिससे तेरे अदृश्य अवयवों में पीड़ा होगी । (२ राजा १३:१७ - प्रभु की विजय के तीर)

१५. है शैतान, तेरे अनुयायी यह कह कर तुझ पर दोष लगाएंगे कि ''तेरे कारण ही हम बिगड़े हैं'' यह दोष तुझ में बहुत पीड़ा उत्पन्न करेगा । परेशान होकर तू उन से कहेगा कि ''चाहे मैंने तुम्हारे सामने प्रलोभन रखे पर तुम उसमें क्यों फंसे'' । इसके कारण पीड़ा के साथ साथ तेरी बदनामी भी होगी । इसलिए अंत के समय की निर्धारित पीड़ा के समय में तेरे अपने भी तुझे छोड़ कर चले जाएंगे ।

१६. हे दुष्टत्माओं, जब तुम विश्वासियों पर अपने तीर छोड़ने हो, तो वे बदले में प्रभु की विजय के तीर तुम पर छोड़ते हैं । इस प्रकार तीरों की बौछार तुम पर निरंतर होती रहती है, यह इतना अधिक होता है कि तुम उनसे बच नही

सकते । परन्तु हमारे परमेश्वर न हमें विश्वास की ढ़ाल दी है ताकि तुम्हारे जलते हुए तीरों को बुझाया जा सके (इफि ६:१६) ।

१७. हे शैतान, कुछ लोग तेरे फंदों में फंस कर तेरी तरह ही शैतान बन चूके हैं । कुछ लोग दुष्टात्माओं से ग्रसित हो चुके हैं । ये तेरे ही दुष्ट काम हैं । परन्तु जान ले कि हमारा उद्धारकर्ता तुझ से बड़ा और महान है और उन लोगों को तेरे चंगुल से छुड़ा लेगा । इसलिए हम तुझे आज्ञा देते हैं कि तू अपनी सुनिश्चित हार को जान ले (नीति २४:१६)

१८. हे शैतान, तू अपने बुरे कामों के द्वारा परमेश्वर के लोगों पर प्रतिदिन बहुत अन्याय कर रहा है । यहाँ तक बिना बात के चींटी के द्वारा काट लिया जाना भी तेरा ही काम है । एक प्रचारक ने चार बातें सिखानी चाहीं, परन्तु तेरे काम के कारण वह केवल तीन ही सिखा सका । मुझे एक बुरा सपना आया और यह भी तेरी ही शरारत है । मुझे तेरी ही शरारत के कारण एक झूठा दर्शन दिखाई दिया । पिछले सप्ताह मुझे एक काँटा चुभ गया, यह भी तेरा ही काम था । मुझे एक पत्थर से ठोकर लग गई और यह भी तेरा ही काम था । कुछ लोग बिना सोचे समझे ही मूर्तिपूजा करते

हैं और यह भी तेरी ही दुष्टता है (२ कुरि ४:४) चारों ओर हत्याएं हो रही हैं और यह भी तेरा ही दुष्ट कार्य है (युहन्ना ८:४४) कभी कभी अन्याय प्रबल होता है और यह भी तेरे ही प्रभाव के कारण होता है । गन्दी गन्दी तस्वीरें और बुरी फिल्में लोगों को एक चरित्रहीन जीवन की ओर ले जाती हैं, यह भी तेरी ही प्रेरणा से होता है । बहुत सारे लोग अपने विनाश के लिए बुरी संगतियों और वेश्यालयों में जाते हैं, यह भी तेरी ही शरारत है । प्रार्थना और आराधना भवनों के निर्माण में बहुत सारी रूकावटें आती रहती हैं, यह भी तेरी ही एक चाल है । तेरी ही बुरे कामों के कारण परमेश्वर के विरूद्ध पाप और सच्चे परमेश्वर के प्रति अज्ञानता बढ़ती जा रही है । सभी बुरे कामों में तू ही सब चालें चलता है । जो कुछ भी बुरा हो रहा है, हे शैतान, यह तेरा ही काम है । परन्तु हम तुझे आज्ञा देते हैं कि तू यह जान ले कि हमारा उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह इसलिए प्रकट हुआ कि शैतान के कार्यां को नाश कर दे । इसलिए अपने विनाश को जान ले । (१ युहन्ना ३:८)

१९. हे शैतान, प्रकाशितवाक्य की पुस्तकक में ऐसा लिखा है कि तेरा अन्धकार का सारा राज्य अंत में सर्वनाश हो

जाएगा और ममीह का धार्मिकता का राज्य पूरी तरह स्थापित हो जाएगा । यह एक दिन निश्चय ही पूरा होगा । क्या ऐसा नही होगा ? यह जानते हुए भी जब तू हमारे खिलाफ आता है तो तू अपने ही विनाश को ओर बढ़ रहा है ।

२०. हे शैतान, तेलुगु भाषा में लिखी गई एक कविता की पंक्तियों इस प्रकार कहती हैं ।

जो लोग हमेशा दूसरों में दोष ढूंढते रहते हैं और अपनी कमियों की ओर ध्यान नही देते, उन्हें कोई आशीष नही मिल सकती । यह बात पूरी तरह तेरे लिए सही साबित होती है । इसलिए परमेश्वर का श्राप तुझ पर पड़ा हुआ है।

२१. हे शैतान, क्या तू नही जानता कि जिन लोगों को तुने अपने बुरे कार्यों के द्वारा पापी बना दिया था उनमें से बहुत सारे लोग हमारे उद्धारकर्ता के द्वारा बचाए और संत बनाए जा चूके हैं और अब वे स्वर्ग में हैं । इसलिए जान ले कि तू अपने मार्गों में कभी सफल नही हो पाएगा ।

२२. जब यीशु मसीह, परमेश्वर के पुत्र, ने अपने अपार प्रेम

आअर करूणा के कारण हम पापीयों पर दया की और सब पापों को धो दिया और हमें छुड़ा लिया । तो हम तेरी परवाह क्यों करें जबकि तू हमारे बारे में कुछ भलाई सोचता तक नहीं ? इसलिए हम तुझे आज्ञा देते हैं कि हमारे मार्गों मे से दूर हो जा ।

२३. हे शैतान, तेरे सारे व्यर्थ कार्य असफल कैसे हो गए ? मसीह ने क्रुस पर जो दर्दनाक पीड़ा सही उसका कितना उत्तम परिणाम निकला है, कब्र में तेरे बन्धनों को कितनी बड़ी मिली है । प्रभु यीशु की देह को मुर्दों में से जीवित होने से रोकना के लिए तेरी सारी चालें कितनी बुरी तरह असफल हो गई । इसलिए हे शैतान, जान ले कि तेरी सारी सर्वोत्तम कोशिशों विफल हो जाएंगी और हमारा परमेश्वर हमेशा हमें विजय देता रहेगा ।

२४. हे शैतान व्यवस्थाविवरण की पुस्तक में ऐसे लिखे हैं जिन्हें पढ़कर तेरी हालत खस्ता हो जानी चाहिए (व्यवस्था ३२:३९-४३) । जब हमारा प्रभु यीशु उस मरूस्थल में था, उसमें इस पुस्तक में लिखे हुए वचन बोले, तुझे फटकार लगाई और उसके बाद तुझे प्रकार प्रभु यीशु ने तुझ पर जीत हासिल की । इस कारण हमें भी तुझ पर

विजय मिली हुई है ।

२५. हे शैतान, जब तु प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में लिखे हुए वचनों को सुनेगा तो तेरे होश उड़ जाएंगे । तेरी सम्पूर्ण हार और दण्ड-उसमें लिखा हुआ है - जलता हुआ कुण्ड और अथाह नरक तेरी प्रतीक्षा कर रहा है । यह जान कर हमें साहस मिलता है कि तेरी दुष्टता का अंत नरक है । इससे हमें किसी भी कारणवश डर नही लगता । प्रभु यीशु मसीह के कारण मसीह की कलीसिया को विजय मिली है । परन्तु हे शैतान, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में लिखे हुए दण्ड के अनुसार तू जलते हुए कुण्ड में डाल दिया जाएगा । इसलिए, हम तुझे आज्ञा देते हैं कि महान परमेश्वर और सारे ब्रह्माण्ड के न्यायी के भय को जान ले ।

✻ ✻ ✻

शैतान को डाँटने के लिए सुक्तियाँ

१. हे शैतान, परमेश्वर का पुत्र इसलिए प्रकट हुआ कि वह तेरे कामों को नाश करे । वचन यह नही कि वह केवल शैतान को भगाने के लिए आया (१ युहन्ना ३:८) इसलिए हम

यह दोहराते हुए परमेश्वर की महिमा करते हैं कि ''प्रभु यीशु मसीह के लहू में सम्पूर्ण विजय है परन्तु शैतान के कामों को सम्पूर्ण विनाश होगा'' ।

२. हे शैतान, क्या एलीशा ने अपने सेवक से यह कहा था कि परमेश्वर की सेना उस शत्रु की सेना से कहीं अधिक संख्या में है जो उन्हें मारने के लिए आया है (२ राजा ६:१६) । शैतान, क्या तू नही जानता कि यदि तू अपनी सारी दुष्टात्माओं के साथ हमें घेर ले तो भी परमेश्वर की सेना तुझ से कहीं अधिक बड़ी और शक्तिशाली है और इसलिए तेरी हार सुनिश्चित है और तुझे भागना ही पड़ेगा । इसलिए परमेश्वर के स्वर्गदूतों की सामर्थो सेना से सावधान रह जो हमारी सुरक्षा करती है ।

३. हे शैतान, तू हमेशा हमें नुकसान पहुंचाना चाहता है । परन्तु हमारा परमेश्वर इसे आशीषों में बदल देता है । हमें मिली हुई विजय में आशीशों भी शामिल हैं । हे शैतान, जान ले कि तू हमारे खिलाफ जो कुछ बुरा करेगा वह वापिस तुझ पर ही आ पड़ेगा, इसलिए हम तुझे आज्ञा देते और डाँटते हैं कि हमारे खिलाफ अपनी सारी बुराईयाँ बन्द कर दे (भजन १४१:१०; नीति ११:५, नीति २६:२७) ।

४. शैतान को नित्य की डाँट व फटकार

१. है शैतान उजाड़ और सर्वनाश तेरे लिए है ।

२. हे झूठे, विनाश तेरी प्रतीक्षा कर रहा है ।

३. हे शैतान, तुझ पर दोष और दण्ड की आज्ञा हो चुकी है ।

४. हे शैतान, जो संसार में पाप लेकर आया, तेरे सारे कार्य नाश हो जाएं ।

५. हे गिरे हुए शैतान, हम से दूर हो जा ।

६. हे महान पापी, तू इसके सारे परिणाम भुगते ।

प्रभु परमेश्वर को हार्दिक स्तुति

हे प्रभु, हम तेरे लिए हार्दिक स्तुति अर्पित करते हैं ।

हे सत्य के परमेश्वर, तुझे सदा के लिए स्तुति मिलती रहे ।

हे निर्दोष प्रभु, हम तेरी स्तुति करते हैं ।

हे प्रभु, तू जो संसार में छुटकारा लेकर आया, हम तेरी स्तुति करते हैं ।

हे जय के प्रभु हम तेरी स्तुति करते हैं ।

हे महिमामय प्रभु, हम तेरी स्तुति करते हैं क्योंकि तुने हमारे सारे पाप दूर कर दिए हैं ।

७. हे चोर, तू अपना सारा धन और अच्छे गुण खो जुका है।	हे सारे आलौकिक गुणों के पिता, स्वर्ग का मार्ग आप ही हैं।
८. हे शैतान, तू हारा हुआ है और तेरा राज्य उजड़ जाए।	हे विजयी प्रभु, हम आपकी स्तुति करते हैं।
९. हे पीड़ा देने वाले, तेरी तकलीफें बढ़ जाएं।	हे चंगा करने वाले, हम तेरी स्तुति करते हैं, क्योंकि तू सारी पीड़ाओं की दवा है।
१०. हे बुरी, चालें चलने वाले तेरे सारे काम प्रकट हैं।	हे ज्योति के प्रभु, आपकी महिमा हो।
११. हे शैतान, तू नरक का हकदार है और सदा के लिए वहीं पर दुख उठा।	हे परमेश्वर, हमारा रक्षक, हम सर्वदा आपका आदर करते हैं।
१२. हे विश्वासियों को तंग और परेशान करने वाले, तेरे दुख बढ़ते जाएं।	हे अपने लोगों की परेशानियों को दूर करने वाले प्रभु, तेरी सर्वदा स्तुति होती रहे।
१३. हे शैतान, परमेश्वर के अस्तित्व को न मानने वाले, तू सभों के द्वारा ठुकरा दिया जाए।	हे परमेश्वर, सारा स्वर्ग और पृथ्वी आपकी स्तुति करे।

Bible Mission HQ Guntur

१४. हे परमेश्वर और विश्वासियों के शत्रु, हम फटकारते हैं ।

हे प्रभु, विश्वासयोग्य लोगों के मित्र, हम आपकी प्रशंसा करते हैं ।

१५. हे विश्वासियों के स्वास्थय को बिगाड़ने वाले, तु हमेशा रोगों में तड़पड़ता रहे ।

हे चंगाई देने वाले प्रभु, हम अपने सारे जीवन और सारे बल से आपका धन्यवाद करते हैं ।

१६. हे शैतान, तु जो परमेश्वर से दूर है, सभी तुझे तुच्छ जानें.

हे अपने लोगों के साथ सर्वदा रहने वाले प्रभु, हम आपकी प्रशंसा करते हैं ।

१७. हे परमेश्वर के लागों और उनके कामों को नाश करने वाले शैतान, तेंरे सारे कार्य नाश हो जाएं ।

हे अपने लोगों के कार्यों को स्थापित करने वाले प्रभु, तेंरे सारे कार्य तेरी स्तुति करें ।

१८. हे शैतान, तू परमेश्वर के लोगों का भोजन बिगाड़ने की कोशिश करता है । इसलिए तेरा भोजन हमेशा मिट्टी ही बना रहे ।

हे अपने लागों के स्वर्गीय मन्ना, हम आपकी स्तुति करते हैं ।

१९. हे शैतान, तुने परमेश्वर के लोगों के खिलाफ दुष्टात्माएं लगाई हुई हैं । तेरी सारी योजनाएं विफल हो जाएं ।

हे परमेश्वर, आपने अपने लोगों की सुरक्षा के लिए स्वर्गदूत दिए हुए हैं । हम आपकी स्तुति करते हैं ।

२०. हे दुष्ट शैतान, तु एक बड़ा धूर्त है, तू हमेशा हारता रहे ।

हे परमेश्वर, आपने यह सम्भव कर दिया है कि सभी आप तक पहुंच पाएं, इसलिए सभी आपकी स्तुति और महिमा करें ।

२१. हे बिगड़े हुए शतान, तेरे काम सर्वदा नाश हो जाएं ।

हे प्रभु सुरक्षा की चट्टान, सारी सृष्टि आपकी स्तुति करे ।

२२. हे बिगड़े हुए शैतान, तेरे काम सर्वदा नाश हो जाएं ।

हे जयवंत प्रभु, हम आपकी स्तुति करते हैं ।

२३. हे पाप और अन्धकार की संतान, नरक तेरा निवास स्थान बनें ।

हे ज्याति के परमेश्वर, सारा स्वर्ग आपकी स्तुति और महिमा करे ।

२४. हे दुष्टता के स्त्रोत, तू हमेशा दण्ड पाए ।

हे जीवित जल के स्त्रोत, हम आपके सारे वरदानों के लिए आपकी स्तुति करते हैं ।

२५. हे रोग देने वाले शैतान, तु हमेशा पीड़ा में रहे ।	हे परमेश्वर, जो हमारे लिए कुचला गया । सभी आपके आगे झुक जाएं ।
२६. हे सभी रोगों की जड़, तेरे दुख बढ़ते जाएं ।	हे उद्धारकर्ता, आपने सभी रोगों को जड़ से उखाड़ फेंका है । इसलिए आपकी स्तुति करते हैं ।
२७. हे शैतान, जिसमें प्रेम, दया बिल्कुल नही है, सभी तुझसे नफरत करें ।	हे हमारे जीवित और दयालू परमेश्वर, हम आपकी महिमा करते हैं ।
२८. हे दुष्ट, तू जो मनुष्यों को बिथरा देता है, सभी तुझे नरक में सदा के लिए अकेला छोड़ कर चले जाएं ।	हे अच्छे चरवाहे, जिसने हमारे लिए आपना जीवन दे दिया, हम आपकी संगति में आनन्दित होते हैं ।
२९. हे शैतान, तुने अपनी महिमा खो दी है । तू अन्धकार में तड़पता रहे ।	हे हमारे अनुग्रहकारी प्रभु, स्वर्ग और पृथ्वी आपकी स्तुति करें ।

Bible Mission HQ Guntur

३०. हे शैतान, तू डर कर भाग जाए । तेरी दुष्टात्माऐं भी तुझे अकेला छोड़कर चली जाएं ।

हे हमारे पापों और धावों को धो देने वाले प्रभु, हम आपकी आराधना करते हैं ।

३१. हे दुख और घाव देने वाले शैतान, हम प्रभु के बल के द्वारा तुझे अपने पाँव के नीचे कुचलते हैं ।

हे पापियों के छुड़ानेहार प्रभु, हम आप पर भरोसा रखते हैं ओर आपकी स्तुति करते हैं ।

३२. हे नाश करने वाले, तेरा सर्वनाश हो जाए ।

हे प्रभु, आप जो हमें थमता और सम्भालता है, हम सर्वदा तेरी स्तुति करते हैं ।

* * *

पवित्रीकरण की प्रार्थना

(स्तुति, पवित्रीकरण और प्रार्थनाएं)

१. स्तुति :

१. हे परमेश्वर, हमारे पिता, जिसने सबकुछ मेरे लिए रचा है, जो प्रतिदिन मेरी सब आवश्वकताओं को पूरा करता हैं । जो

बिना रूके मुझे सबकुछ देता है हालाँकि मैं बच्चा होने के कारण इन्हें ग्रहण नहीं कर पाता, जिसने मुझे रचा है, हे मेरे प्यारे पिता, हे परमेश्वर मेरे पिता, हे मेरे प्रभु हे मेरे पालनहार, हे मेरे रक्षक और मेरे सबकुछ ! मैं तुझे बहुत स्तुति अर्पित करता हूँ । हे पिता, जैसे आपने मुझे अपनी संतान होने के लिए चुना है, न केवल सृष्टि के द्वारा बल्कि अपने पुत्र के द्वारा भी । मैं तेरा बहुत धन्यवाद करता हूँ ।

तू जो अपने वरदानों, आपने धीरज, अपने मार्गदर्शन, मेरी कठिनाइयों को हटाने में तेरे कार्यों, और मेरे लिए किए गए तेरे दयालू कार्यें के द्वारा तू मेरे लिए जो प्रेम प्रकट करता है उसके लिए मैं तुझे बहुत स्तुति अर्पित करता हूँ । फिर भी, मेरी स्तुति तेरे प्रेम की तुलना में कुछ भी नहीं है ! तेरे प्रेम की तुलना में मेरे दिल से निकलने वाला आभार कुछ भी नहीं हैं ! यदि ममैं सब काम छोड़ कर केवल तेरी स्तुति ही करता रहूँ, तौ भि ये तेरे तरस की तुलना में बहुत कम होगी । जबकि तू अपने हाथों से यह छोटी सी स्तुति स्वीकार कर रहा है, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ । तेरी उस सामर्थ को याद करते हुए, जिसके द्वारा तू मेरी रक्षा करता है और मुझे समृद्ध बनाता, मैं तेरी प्रशंसा करता हूँ । मैं विश्वास करता हूँ कि आने वाले दिनों में भी तू मेरे जीवन में ऐसे

ऐसे काम करता रहेगा, जिनके लिए मैं तेरी सराहना करता हूँ । मेरी आशा है कि मेरे जीवन के अंत में तू मुझे स्वर्ग में ले जाएगा, जिसके लिए मैं तुझे सलाम करता हूँ ।

२. (१) हे अनादि परमेश्वर, हे अनन्त परमेश्वर, हे परमेश्वर तू जो है और जो रचा नहीं गया है ! मैं तेरे वैभव के लिए तेरी प्रशंसा करता हूँ ।

(२) हे अपरिमित परमेश्वर, तू अनन्त है । इसलिए मैं तुझे अनन्त-जीवित स्तुति देता हूँ । जैसे तु सदा तक स्थिर है, वैसे ही मैं भी सदा तेरी स्तुति करता रहूँगा ।

(३) हे जीवन के परमेश्वर, जब मेरा जीवन निर्बल और क्षीण हो जाता है, तू मुझमें अपना नया जीवन डालता है, जिसके लिए मैं तेरी स्तुति करता हूँ ।

(४) हे सामर्थी परमेश्वर, तू मेरे मुश्किल कामों या असंभव लक्ष्यों को संभव बना देता है, इसलिए अपने बल के लिए मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ ।

(५) हे सर्वज्ञानी परमेश्वर, तू बुद्धि से परिपूर्ण है, तू मेरी कठिनाइयों और चाहतों को मेरी बताने से पहले ही जानता है । इसलिए तू मेरी चाहतों को पूरा कर सकता है । चाहे मेरी चाहतों

को पूरा होने में बहुत रूकावटें आएं, तू उन्हें पूरा होने में आनेवाली सारी अड़चनों को बुद्धिमानी के साथ दूर कर सकता है । इसलिए मैं अपना सारा धन्यवाद और अपनी सारी स्तुति तुझे देता हूँ ।

(६) हे पवित्र परमेश्वर, तूने मुझे और सब बस्तुओं को पवित्र बनाया था, परन्तु पापी आ गया और मैं अपवित्र हो गया । परन्तु फिर भी तू अपनी पवित्रता के द्वारा मेरी पवित्रता को नया कर सकता है, जिसके लिए मैं शुद्ध और पवित्र मन से तेरी प्रशंसा करता हूँ ।

(७) हे पिता, देहधारी प्रेम, तू मुझे पार्थिव माता-पिता से अधिक प्रेम करता है, उसके लिए मैं तुझे सलाम करता हूँ ।

(८) हे इन्साफ के परमेश्वर, जब भी मैं गलती करता हूँ, तू मुझे सही तरीके से सुधारता है, इसलिए उचित है कि मैं तुझे धन्यवाद दूँ । इसलिए मैं तेरी प्रशंसा करता हूँ ।

(९) हे निराकार परमेश्वर, हालाँकि मैं अपनी निर्बलता के कारण तुझे देख नहीं पाता हूँ, पर तू मुझे देखता है । हालाँकि तू नराकार है पर तुने मुझे एक लाभदायक शारीरिक रूप और निराकार आत्मा दिया है । इसलिए मैं अपने शरीर और आत्मा से तेरी प्रशंसा करता हूँ ।

(१०) हे सर्वप्यापी पिता, तू स्वर्ग, पृथ्वी और हर स्थान में विद्यामान है । इसलिए मैं तेरी महिमा करता हूँ । मैं जहाँ कहीं भी जाऊँ, तू वहाँ उपस्थित होता है और मेरा सहायक बनकर मेरे साथ रहता है । तू मुझमें से अकेलेपन के सारे विचार निकाल सकता है । इसलिए मै हर स्थान में तेरा धन्यवाद देता हूँ ।

(११) हे स्वतन्त्र प्रभु, मैं तुझे सलाम करता हूँ, क्योंकि तू सबकुछ स्वयं ही कर सकता है । तू मुझे भी सबकुछ अपने आप करने का बल दे सकता है । तुने मुझे इस योग्य बनाया है कि मैं सब काम अपने आप केवल तुझ पर निर्भर रहते हुए ही पूरे कर सकता हूँ । इसलिए मैं तुरन्त अपनी सारी स्तुति तुझे अर्पित करता हूँ । मेरी चाहत है कि मैं बिना किसी दबाव के आजादी से तेरी स्तुति करूँ । तूने मुझे अपने गुण देकर अपने चरित्र और अपनी इच्छा के अनुसार बना लिया है । अपने सारे गुण देने के बाद, यदि तुने मुझे स्वतन्त्र इच्छा का गुण न दिया होता तो बाकी सबकुछ व्यर्थ हो जाता । इसलिए मुझे आजादी का गुण देने के लिए मैं तेरी स्तुति करता हूँ ।

(१२) हे त्रिएक परमेश्वर, जो पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के रूप में प्रकट हुआ है, मैं तेरे प्रकटीकरण के लिए स्तुति करता हूँ । तू ऐसा परमेश्वर नहीं है जो छिपा हुआ है, परन्तु तुने

अपने आप को प्रकट कर दिया है । जबकि तू ऐसा परमेश्वर है जो अपने गुण, अपने काम और अपनी महानता मुझ पर प्रकट करता है, इसलिए मैं तुझे धन्य कहता हूँ । तू एक और एक ही समय पर तीन व्यक्तियों के रूप में प्रकट हुआ है । हम इस भेद को समझ तो नहीं सकते परन्तु विश्वास अवश्य करते हैं । स्वर्ग में पहुंचकर मैं इस भेद को समझ जाऊँगा । मैं अपने सीमित ज्ञान के द्वारा तेरी अनन्त बुद्धि को कैसे समझूंगा ? मैं अनन्तता में तेरे बारें में नई नई बातें सीखूंगा । जबकि तेरे प्रकाशन और उनके प्रति मेरी समझ का कोई अन्त नहीं है, इसलिए मैं अपनी अनन्त स्तुति तुझे अर्पित करता हूँ ।

(१३) हे देहधारी महिमा ! हे आनन्द के अवतार ! मैं विश्वास करता हूँ तू अपनी उपस्थिति में, अपनी संगति में और तेरी महिमा के लिए तेरे चेहरे को निहारते रहने का आनन्दित समय हमेशा बिताने का अवसर देगा और इसके लिए मैं तेरी प्रशंसा करता हूँ ।

(१४) हे परमेश्वर, तुने हमें एक शरीर दिया है ! हम तेरी प्रशंसा करते हैं । तू इस पापी शरीर को पवित्र शरीर में बदल रहा है । अंत में तू मुझे एक महिमामय शरीर देगा और अपने पास बुला लेगा । इसलिए मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ । तुने अपने आप को

त्रिएक परमेश्वर के रूप में प्रकट किया है। उसी प्रकार तुने मुझे भी तीन भागों, आत्मा, प्राण और शरीर, में बनाया है। इसलिए मैं सारा सम्मान तूझे देता हूँ। इन तिनों को मिलाकर मुझे एक व्यक्ति बनाने के लिए मैं तेरी स्तुति करता हूँ। इस अनुठी सृष्टि के लिए मैं तेरी स्तुति करता हूँ। मैं विश्वास करता हूँ कि तुने मुझे जो कुछ दिया है उसे प्राप्त करने में तू मेरी सहायता करेगा और उसके लिए मैं तेरी महिमा करता हूँ।

३. हे पिता तेरा, तेरे कामों का, तेरे आलौकिक गुणों का, मेरे साथ तेरे व्यवहार का और तेरी महिमा का वर्णन कौन कर सकता है? इसलिए मैं तेरी प्रशंसा करता हूँ।

४. हे उदार दानी पिता, तेरे सब मुफ्त उपहारों के लिए मैं तेरी प्रशंसा करता हूँ। हमें हवा मुफ्त में मिली है और इसके लिए मैं कोई टैक्स नहीं देता। यदि मैं दूँ भी तो यह पर्याप्त नहीं होगा। मैं तेरे सब मुफ्त उपहारों के लिए तेरी स्तुति करता हूँ। सृष्टि के आरम्भ से लेकर इसके अंत तक तू सब मनुष्यों को, विश्वासयोग्य और विश्वासघातियों को, सब पशुओं, सब वनस्पतियों और सब प्राणियों को सब कुछ मुफ्त में देता आया है और देता रहेगा। यदि हम अपने आप उन्हें प्राप्त करना चाहें तो अंश मात्र भी प्राप्त नहीं कर पाऐंगे। तू हमें अनगिनत फल और सब्जियां देता है।

हमारे खाने के बाद भी वे बहुत बच जाती हैं । इसलिए हम तेरी प्रशंसा करते हैं । पानी भी कभी नहीं होता । तुने धरती के गर्भ में बहुत सारे खनिज और धातुएं रखी है । मनुष्य ने अभी तक उन्हें इस्तेमाल नहीं किया है । उनका केवल कुछ ही भाग इस्तेमाल हुआ है । हवा भी समाप्त नहीं होती है । तूने हमारी मेज पर जो कुछ भी रखा है वह कभी पूरी तरह समाप्त नहीं होता है । जैसे जैसे हम एक ओर से उन्हें खाते जाते हैं, तू दूसरी ओर से नई वस्तुएं निरंतर देता रहता है । तेरे दानी स्वभाव का वर्णन कौन कर सकता है ? हमारी मूर्खता के कारण हम उनका पूरा उपयोग नहीं कर पाते हैं । यदि सभी मनुष्य तेरे उपहारों को प्राप्त करने के योग्य हो जाएं तो सब लोग धन्य हो जाएंगे और कोई भी गरीब नहीं रहेगा । तेरी सृष्टि की कोई भी वस्तु बेकार नहीं है । प्रतिदिन मेरी देखभाल करने में तू बहुत कुछ खर्च करता है । यदि तू उसका बिल बनाए तो क्या मैं उसे अदा कर पाऊँगा ? हर क्षण मिलने वाले तेरे उपहारों लिए मैं तेरा बहुत धन्यवाद करता हूँ ।

५. हे पिता, तूने मुझे जितने उपहार दिए है, उनमें से तेरा पुत्र सबसे अधिक महत्वपूर्ण और अनन्त उपहार है । मैं तेरी स्तुति इसलिए करता हूँ, क्योंकि प्रत्येक क्षण तेरा आदर करने लिए मैं बाध्य हूँ । तेरे पुत्र से बढ़कर और कोई उपहार नहीं है ।

और उसके लिए मैं तुझे धन्य कहता हूँ । मैं तेरे इस आदेश के विरोध में कुछ नहीं कह सकता कि मैं पाप को छोड़ दूँ, बपतिस्मा हूँ । मैं तेरे इस आदेश के विरोध में कुछ नहीं कह सकता कि मैं पाप को छोड़ दूँ, बपतिस्मा लूँ, उद्धार प्राप्त करूँ, तेरे पवित्र प्रभुभोज में भाग लूँ, दूसरों को उद्धार के लिए सेवा करूँ, तेरी पवित्र पुस्तक का अपने हृदय में छाप लूँ और अपने जीवन के अंत तक तेरी उपस्थिति में जीऊँ ! यदि मैं बैठकर तेरे उपहारों को गिनने लगूँ, तो मेरा पूरा जीवन भी पर्याप्त नहीं होगा । हालाँकि हमारा विश्वास, हमारी समझ और हमारी स्तुति करूँ, कहीं न कहीं चूक हो ही जाती है । परन्तु तू फिर भी हमसे प्रसन्न होता है, जिसके लिए मैं तेरी प्रशंसा करता हूँ । तेरे पुत्र से बढ़कर और कोई उफहार नहीं है, तेरे अनुग्रह से बढ़कर से बढ़कर और कोई अनुग्रह नहीं है और तेरी कलीसिया से बाहर उद्धार नहीं मिलता है । इसलिए तेरी उदारता के लिए मैं तेरी बहुत स्तुति करता हूँ ।

६. मेरा जन्म और जीवन चाहे कितना भी पवित्र क्यों न रहा हो, यदि मैं अपनी मृत्यु के समय स्वर्ग के लिए तैयार नहीं हूँ तो मेरा सारा जीवन बेकार है । यदि मैं अपनी मृत्यु के समय तैयार हूँ तो मैं इतना धन्य हूँ कि स्वर्ग में प्रवेश कर सकूँ । धन्य हाने का एक समय भी है जो उससे भी अधिक है । उस समय के

लिए, जोकि पलक झपकते ही होगा, अर्थात हमारे प्रभु का दूसरा आगमन, यदि मैं उसके लिए तैयार नहीं हूँ तो मुझे क्लेश काल में से होकर गुजरना पड़ेगा । यदि मैने जीवनभर विश्वास रखा, परन्तु दूसरे आगमन की प्रतीति नहीं की, या अगर प्रतीति की भी परन्तु उसके लिए तैयार नहीं रहा तो मेरी हालत कितनी भयानक हो जाएगी ! तूने हमारे सामने आराधना का जीवन, एक धर्मी मृत्यु और विश्वासयोग्य लोगों के साथ जी उठना (रैप्चर) रखा है, उसके लिए मैं तुझे सलाम करता हूँ । यदि ऐसा नहीं है तो हमारे जीवन से क्या होगा ? हे पिता, तू हमें इन भयानक हालातों में पड़ने से रोक सकता है, और इसके लिए मैं तुझे दंणवत करता हूँ ।

२. पवित्रीकरण

१. हे परम पवित्र पिता ! हालाँकि तूने प्रथम माता-पिता को पवित्र अवस्था में रचा था, परन्तु वे पाप में गिर पड़े और यह पाप हममें भी आ गया । हे पिता, तूने हममें वह सामर्थ डाली है जो पाप को छोड़ने के लिए आवश्यक है । मैं कोशिश कर रहा हूँ, परन्तु असफल हो रहा हूँ । मैं फिर से तेरे सामने अंगीकार करता हूँ । सूरज, चाँद और सितारों का प्रताप मिलकर भी तेरी पवित्रता के आगे फीका पड़ जाता है । पवित्र स्वर्गदूतों की पवित्रता भी

तेरी आलौकिक पवित्रता के सामने बहुत नीची है । तो हम पापी कैसे निर्दोष ठहर सकते हैं ? तेरी क्षमा के बिना हम कब के नाश हो गए होते । हे मेरे प्रभु, जब भी पाप ने मेरे विचारों, शब्दों, प्रयासों और कामों में तू मेरी मदद कर । जब भी कुछ गलत प्रकट होता है, मैं शैतान का सामना करने के लिए उसे कहता हूँ, 'हे शैतान, यह तेरा काम है । तेरा मेरे ऊपर कोई अधिकार नहीं है । मुझसे दूर हो जा।' समय समय पर तेरे सामने अपने पापों का अंगीकार करके मैं अपने आप को पापों से शुद्ध करने की कोशिश करता हूँ ।

२. हे परमेश्वर, पाप अपने आप में कुछ नहीं है । यह मनष्यों में प्रवेश करता है और उन्हें रोगी कर देता है । उस समय मैं तेरी चंगाई के लिए पुकारता हूँ । उस पाप को तेरे सामने अंगीकार करने के द्वारा मैं उस रोग का कारण और समाधान ढूँढने की कोशिश करता हूँ । यदि मैं चंगाई पाने में असफल हो जाऊँ तो मैं तेरे आगे प्रार्थना करता हूँ और तेरी आशीषों की दवा प्राप्त करता हूँ । क्या तुने नामान के लिए दवा के रूप में पानी का उपयोग उपयोग नहीं किया था ! यह जानते हुए कि मनुष्य पाप में गिरेगा और परिणामस्वरूप रोगी बन जाएगा, तूने बुटियाँ और अन्य पौधे दवा के रूप में दिए हैं, और कुछ लोगों को उन्हें दवा

में बदलने का ज्ञान भी दिया है, जिनके द्वारा तू बहुत लोगों को चंगाई दे रहा है । ये तेरा अदभुत अनुग्रह है । फिर भी, मेरी इच्छा है कि जितने लोगों ने तेरे नाम पर विश्वास किया है, वे बिना दवाओं के प्रार्थना, स्तुति और विश्वास के द्वारा चंगाई प्राप्त करें ।

३. हे पिता ! कठिनाइयां, गरीबी और कर्ज पाप के कारण आते हैं । यदि ये मेरे ऊपर आते हैं तो मैं विश्वास के द्वारा उनसे छुटकारा पाने की कोशिश करता हूँ ।

४. इनके आलावा और भी बहुत सारी कठिनाइयां है जिनसे छुटाकारा पाने के लिए मैं प्रार्थना करता हूँ ।

५. एक पाप दूसरे पाप को जन्म देता है - अविश्वास, डर, चिंता, दुविधा, कष्ट, तेरे मार्गदर्शन को ना समझ पाना, तेरी चुप्पी को ना समझ पाना । शैतान, शत्रुओं, तुफानी मौसम, गर्मी, वर्षा, कड़कती हुई बिजली, बुरे सपनों, झूठे दर्शनों, युद्धों, अकालों, छुत के रोगों, जहरीले कीड़ों, मृत्यु नरक इत्यादि से न डरने के द्वारा मैं तुझसे साहस प्राप्त करता हूँ ।

६. युहन्ना १४:१४, इफिसियों ३:२१ में बताई गई प्रतिज्ञाओं और मरकुस ११:२४ में दी गई शिक्षा पर विश्वास करने के लिए मैं तैयार हूँ ।

७. हे पवित्र आत्मा परमेश्वर, जिसने मुझे कहा है कि मैं तेरे समान पवित्र बनूँ, मैं तेरी बहुत स्तुति करता हूँ। मुझे प्रत्येक पाप से बचाए रखें । मुझे प्रलोभन में न पड़ने दे । मैंने निर्णय लिया है कि मैं प्रत्येक पाप से दूर रहूँगा । मैं पूरा प्रयास कर रहा हूँ कि मैं तुझे भुला देने, तुझ पर क्रोधित होने, तेरा धन्यवाद न करने, आराधना में आलसी बनने, बजुगों का आदर न करने, लोगों को पीटने, पुरूषों और स्त्रियों के प्रति बुरी लालसा रखने, दूसरों की सम्पत्ति का लालच करने, दूसरों से ली हुई या चोरी की हुई वस्तु वापिस न लौटाने, दूसरों के बारे में अफवाहें फैलाने और उनकी बदनामी करने, झूठ बालने, जलासाजी करने, बहस करने, ईर्ष्या करने, गलत ढंग से झिड़कने, दूसरों से नफरत करने, डांटने, दूसरों के फिलाफ षड़यंत्र रचने, बेनाम पत्र लिखने, दूसरों के पाप में सम्मिलित होने, और ऐसे ऐसे अन्य अपराधों में पड़ने के पाप से बचा रहूँ।

८. मैंने निर्णय लिया है कि जब भी कठिनाई आती है तो मैं ऐसा सोचूँगा कि यह मेरी भलाई के लिए ही आई है और उस समय आवश्यक प्रत्येक काम करूँगा । मैंने निर्धारित किया है कि मैं हर समय, प्रतिदिन तेरे बारे में ही सोचूँगा और भलाई करने से पीछे नहीं हटूँगा । मैंने यह भी निर्णय लिया है कि मैं सुबह

उठते ही और भलाई करने से पीछे नहीं हटूँगा । मैंने यह भी निर्णय लिया है कि मैं गीत गाऊँगा, दूसरों को तेरी गवाही दूंगा, कलीसिया में जाऊँगा, अच्छी पुस्तके पढ़ूँगा, गरीबों को दान दूँगा, सभी जीवित प्राणियों के प्रति दयालू बनूँगा, प्रत्येक आवश्यक घड़ी में तूरन्त प्रार्थना करूँगा, भोजन खाते पीते समय और कहीं भी जाते समय प्रार्थना करूँगा, पारिवारिक प्रार्थना करूँगा, जब भी कभी रात में जाग जाऊँ तो प्रार्थना करूँगा, और ऐसे ऐसे सभी काम निरंतर करूँगा । साथ ही, मैंने यह भी निर्णय लिया है कि अपने कारोबार में ईमानदार रहूँगा ।

९. (१) हे परमेश्वर, तेरी इच्छा मेरी इच्छा है । यदि मेरी इच्छा तेरी इच्छा के विरोध में आती है तो मैं अपनी इच्छा को त्याग दूँगा ।

(२) हे परमेश्वर, यदि तू मुझे किसी स्थान पर जाने के लिए कहे, यदि वहां जाने की मेरी इच्छा न हो या वहां जाने की मेरी क्षमता या सम्भवता न हो, तभी मैं आब्राहम के समान बिना कोई प्रश्न किए वहां अवश्य जाऊंगा ।

(३) हे परमेश्वर, यदि तू मुझे कोई कठिन काम करने के लिए दे और बिना असफल हुए इसे पूरा करने के लिए कहे, यदि मैं उसे करते हुए निरूत्साहित हो जाऊँ और अनिच्छुक महसूस करूँ, तभी मैं उसे पूरा करूँगा ।

(४) हे परमेश्वर, यदि तू मुझे किसी ऐसे व्यक्ति का सुसमाचार सुनाने को कहे जिसे मैं पंसद नहीं करता, तो मैं अपने भीतर छिपी हुई सारी कायरता को छोड़कर उससे बातचित करूँगा ।

(५) हे परमेश्वर, यदि तू मुझे किसी भी व्यक्ति को तेरी गवाही सुनाने के लिए कहे, तो मैं उसे तेरी गवाही दूँगा, चाहे मुझे यह न पता हो कि बोलना क्या है ।

(६) हे परमेश्वर, यदि तू मुझे जंगली जानवरों से भरे हुए जंगल को पार करके आने वाले गांवों में जाकर तेरा प्रचार करने के लिए कहे, तो मैं बिना डरे वहां जाऊँगा ॥

(७) हे परमेश्वर, यदि तू मुझे नरभक्षी आदिवासियों में जाकर सुसमाचार का प्रचार करने के लिए कहे, तो मैं बिना कोई प्रश्न किए वहां जाकर ऐसा करूँगा ।

(८) हे परमेश्वर, यदि तू मुझे ऐसे स्थान पर जाने के लिए कहे जहां की भाषा मैं नहीं जानता, तौ भी मैं वहां जाऊँगा और तेरा प्रचार करूँगा ।

(९) हे परमेश्वर, यदि तू मुझे ऐसे स्थान पर जाने के लिए कहे, के लोग मुझे भाले से बेध कर मार डालें, तो मैं उसके लिए

तैयार होकर जाऊँगा । (क्योंकि तू मुझे शहीदों का मुकुट देगा ।)

(१०) हे परमेश्वर, यदि तू मुझे कहे कि मैं किसी पहाड़ी पर चला जाऊँ और चालीस दिन का उपवास रखूँ, तो मैं ऐसा कहते हुए करूँगा कि इससे बड़ा सौभाग्य और कोई नहीं है ।

(११) हे परमेश्वर, यदि मेरा कोई प्रिय जन मृत्यु के समीप पहुंच गया हो और बहुत सारे लोग उसके लिए प्रार्तना कर रहे हों, परन्तु फिर भी वह न बचे, तभी मैं आनन्दित हूंगा और तेरी स्तुति करूँगा ।

(१२) हे परमेश्वर, यदि मेरे पास पैसा भी नहीं है और तूझे अगले दिन गरीबों को भोजन खिलाने के लिए तो मैं ऐसा जरूर करूँगा ।

(१३) हे परमेश्वर, यदि तु मुझे कोई असम्भव काम करने के लिए कहे तभी मैं 'न' नहीं कहूँगा ।

(१४) हे परमेश्वर, तेरे वचन में लिखा है कि नर और नारी में कोई भिन्नता नहीं है । इसलिए मुझे ऐसा बना दे कि मैं अपने से छोटी लड़की का अपनी छोटी बहन मानूँ अपने से बड़ी लड़की को अपनी बड़ी मानूँ, अपने से छोटे लड़के को अपना छोटा भाई मानूँ, अपने से बड़े लड़के को आपना बड़ा भाई मानूँ, बुजुर्ग औरतों का

मैं अपनी माता मानूँ, बुजुर्ग पुरूष को अपना पिता मानूँ । मैंने ठान लिया है कि मैं अपने ऊपर के अधिकारियों अर्थात् बुजुर्गों, शिक्षकों का आदर करूँगा ।

(१५) हे मेरे पिता, जब भी कभी मैं लोगों को देखूंगा तो यह प्रार्थना जरूर करूँगा कि 'उन्हें आशीष दे' ।

(१६) हे परमेश्वर, मैंने निर्णय लिया है कि जब भी निराशा या हताशा लोगों को देखूँगा ता उनके लिए तरस से भर जाऊँगा ।

(१७) हे परमेश्वर, जब भी मैं दुनिया का मानचित्र देखूंगा तो हर देश और हर द्वीप के लिए प्रार्थना करूँगा ।

(१८) हे परमेश्वर, मैं मूर्तिपूजकों, यहूदियों, बौद्धों, जैनियों, मुस्लिमों और नास्तिकों के लिए प्रार्थना करने के लिए तैयार हूँ ।

(१९) हे परमेश्वर, मैं कुछ समय निकाल कर सब प्राणियों, वनस्पति, श्रापित पृथ्वी और आकाश की वस्तुओं के लिए प्रार्थना किया करूँगा ।

(२०) हे परमेश्वर, मैं प्रार्थना किया करूँगा कि जो कुछ तूने रचा है, उन सब को तू आशीष दे ।

(२१) हे परमेश्वर, मैं निर्णय लिया है कि जो कुछ मैं भूल गया हूँ वह सब भी तेरे सामने रखूंगा ।

(२२) हे परमेश्वर, मैं उन सब वस्तुओं के लिए भी प्रार्थना करूँगा, जो मनुष्य ने अपने लिए तैयारी की हैं जैसे स्कूल, अस्पाताल, प्रशिक्षण संस्थान, सब कारोबार और सब उपयोगी वस्तुएं ।

१०. हे परमेश्वर मैं तेरे सामने कुछ निवेदन रखाता हूँ :

(१) मैं विश्वास करता हूँ कि तू इस गीत के बोल को शीघ्र ही पूरा करेगा, ''हे मसीहा कलीसिया ! बड़े बड़े काम करने का समय आ पहुंचा है ।''

(२) मैं विश्वास करता हूँ कि तू इस गीत के बोल को पूरा करेगा, ''जब अनन्त परमेश्वर मेरी ओर है, तो मनुष्य मेरे विरूद्ध क्या कर सकता है ?''

(३) मैं विश्वास करता हूँ कि तू इस गीत के बोल भी जरूर पूरा करेगा, ''मानसिक दबाव तुम्हारे लिए नहीं है, बल्कि तुम्हारे लिए तो महिमामय विचार हैं ।''

(४) मैं विश्वास करता हूँ कि तू इस गीत पर भी अपनी आशीष देगा,''यीशु का नाम जपो'' ।

रविवार को अर्पित की जानेवाली स्तुति

१. हे परमेश्वर, तूने 'पहले दिन' ज्योति की रचना की और सातवें दिन सारी सृष्टि की रचना पूरी की जो कि अंतिम दिन है । बाइबल के इतिहास के इतिहास से सीखते हैं कि शनिवार ही सातवों दिन है । इसलिए पहला दिन, जिस दिन तूने आज्ञा की कि ''उजाला हो जाए'' रविवार ही होना चाहिए । जो दिन संसार के इतिहास में सबसे पहले आया वह रविवार ही है । इसलिए मैं तेरी स्तुति करता हूँ ।

२. तूने रविवार, ज्योति का दिन, हम मसीहियों को आराधना करने के लिए दिया है । इसलिए हमारी आराधना का दिन उजाले का दिन है । इसलिए हम तेरी महिमा करते हैं ।

३. प्रभु यीशु के पृथ्वी पर आने और स्वर्गारोहण तक सातवां दिन ही सबत का दिन था जो विश्राम दिन के रूप में मनाया जाता था, जिसके लिए हम तेरी प्रशंसा करते हैं ।

४. हे प्रभु यीशु, शनिवार तेरे शिष्यों के लिए विलाप का दिन था । यह उनके लिए अन्धकार का दिन था । यह ज्योति का दिन नहीं था । क्योंकि तू, उनका उद्धारकर्ता, उनके पास नहीं था, तुझे तो कब्र में रखा गया था ब वये बहुत निराशा में कह रहे

थे, ''हाय हमने सोचा था कि प्रभु यीशु हमें आजादी दिलाएगा, परन्तु उसे तो उसके शत्रुओं ने मार डाला है । अब हमारा क्या होगा ?'' इसलिए शनिवार बहुत शोक और अन्धकार का दिन था और वह दिन था जिस दिन जब शिष्य तितर बितर हो गए थे । कलीसिया एकत्रित नहीं हुई था । हे प्रभु यीशु, जैसे तुने अपनी मृत्यु आने दी, वैसे ही तूने अपपने शिष्यों पर यह दुःख भरा दिन दिया । यह वह दिन था जो उन्हें 'ज्योति के दिन' के लिए तैयार करने के लिए आया था । कठिनाई के बाद विश्राम आता है, शोक के बाद आनन्द आता है । जैसे कि संसार का इतिहास इसी प्रकार आगे बढ़ा, उसके लिए हम तुझे अपनी स्तुति देते हैं ।

५. हे प्रभु यीशु, जैसे कि मरकुस १६ अध्याय में लिखा है, तू रविवार को कब्र में से बाहर आ गया और पहरेदार तेरे प्रकाश के आगे खड़े और बेहोश हो गए । वह पहला दिन सृष्टि के उजाले का दिन था । उसी प्रकार यह (पुनरूत्थान का) दिन भी उजाले का दिन है । इसलिए हम अपनी स्तुति तुझे अर्पित करते हैं ।

६. उस समय से लेकर शिष्य तेरी आराधना करने लगे । उन्होंने रविवार का तेरी आराधना की । वह आराधना आज भी कलीसिया में निरंतर चल रही है । रविवार को कलीसिया में जाना तेरी अराधाना करना है जो तेरी स्तुति करना है । रविवार प्रशंसा

का दिन है । इसीलिए हमें तेरे पुनरूत्थान को केवल इस्टर रविवार को ही नहीं बल्कि वर्ष के सभी ५२ रविवारों को मानना है । इसलिए हम तुझे सलाम करते हैं ।

७. हे प्रभु यीशु, जब भी तेरे शिष्य रविवार को एकत्रित होते थे तू उनकी सभाओं में जाया करता था और उनकी संगति में शामिल हुआ करता था । जबकि तुझे रविवार को आराधना करना भाता है, इसलिए हम मसीही रविवार को ही आराधना सभा करते हैं । इसलिए हम तेरी बड़ाई करते है ।

८. तुने अपने शिष्यों को यह कहकर डांटा नहीं, ''है मेरे शिष्यों, तुम पिछले चार हजार वर्षों से शनिवार को आराधना करते आ रहे हो, अब तुमने आराधना का दिन बदलकर रविवार क्यों कर दिया है ?'' इसलिए शनिवार को आराधना न करना तेरी इच्छा के अनुसार ही है । इसलिए हम तेरे सामने दण्डवत करते हैं ।

९. जबकि पाप पिछले चार हजार वर्षों से शासन करता आ रहा था और पृथ्वी अन्धकार से पूरी ढक चुकी थी । दोबारा, तेरे पुनरूथान के द्वारा एक और नई सृष्टि का जन्म हुआ । और जो लोग तेरे नाम में बपतिस्मा लेते हैं वे तेरी नई सृष्टि बन जाते हैं । उनके लिये यह ज्योति का दिन है । इसलिए हम तेरी प्रशंसा करते हैं ।

१०. जब कोई पापी जन फिराता है तो उसके लिए वह ज्योति का दिन बन जाता है जोकि रविवार के समान है, शनिवार नहीं ।

११. जैसे कि प्रेरित पौलुस ने लिखा, ''हमें पुनरूत्थान की सामर्थ प्राप्त करनी है ।'' शैतान, दुष्टात्माओं, पाप, मृत्यु और पाप के परणिामों पर विजय प्राप्त करने के लिए तुने अपने पुनरूत्थान की सामर्त प्रकट कि है । जब पहरेदार बेहोश हो गए, पाप करवाने वाली दुष्टात्माएं भी गिर पड़ीं । सब शत्रु गिर पड़े । तेरे प्रकाश के आगे कौन खड़ा रह सकता है ? तेरी सामर्थ का सामना कौन कर सकता है ? तेरी आधीनता में आने से कौन मना कर सकता है ? मृत्यु के पास कोई आशा नहीं रही, तेरी सामर्थ पर और कौन विजयी हो सकता है ? ऐसी महान सामर्थ हमें हर रविवार दिया कर । इसलिए हम तेरी स्तुति करते हैं ।

१२. रविवार को हम सुबह से लेकर शाम तक और रात तक तेरी स्तुति करनी है । उस दिन बाजार जाना, कोई और सांसारिक काम करना हमारा काम नहीं है और न ही हमें दुखी होना है । हे प्रभु यीशु, हमें तेरे पुनरूत्थान, तेरे पुनरूत्थान की सामर्थ और तेरे पुनरूत्थान की ज्योति को भूलना नहीं है । यदि हम ऐसा करते हैं तो हमें क्षमा कर देना । जो लोग सचमुच

उपवास रखते हैं, रविवार का दिन सच्चे उपवास का, आनन्दित उपवास का दिन है और ऐसे भोजन का आनन्द उठाने का दिन है जिसके बारे में हम जागृत नहीं हैं । यह सच्ची भूख का मिटाने का दिन है । इतने महान दिन को मसीही कलीसिया नज़रअंदाज कर रही है । यदि इस दिन हम कलीसिया में या घर पर दोनों स्थानों कौन है ! कलीसिया में पासबान के प्रचार से कहीं बड़कर तू उपवास में अधिक सिखाता है । इसलिए मैं तेरी प्रस्तुत करता हूँ । परन्तु फिर भी संगति के लिए हमें कलीसिया में एकत्रित होना है । तब नरक की शक्तियों हम पर प्रबल नहीं हो पाएंगी । इसलिए हमारी अनन्त स्तुति तेरे लिए ही है ।

१३. हे प्रभु, जब हम स्वर्ग पहुँचेंगे, हम छ: दिन यहीं छोड़ जाएंगे और केवल रविवार ही हमारे साथ जाएगा । यही सम्पूर्ण दिन, सम्पूर्ण ज्योति, तेरे पुनरूत्थान की सम्पूर्ण सामर्थ, और तेरा सम्पूर्ण स्वरूप है । अनन्तता में केवल रविवार है, केवल आराधना है, केवल विश्राम और केवल संगति है । हमें यहां अनुग्रह दे, ताकि स्वर्ग में उस आनन्द में सामिल होने से पहले ही हम रविवार के आशीषित समय के आदि हो जाएं । इसके लिए हम तेरी स्तुति करते हैं ।

१४. रविवार पहला दिन है । यदि हम पूरा जीवनभर विश्वास रखें तो सोमवार, मंगलवार, बुधवार, गुरुवार, शुक्रवार,

शनिवार सभी रविवार हो जाएंगे । सभी वर्ष रविवार के वर्ष हो जाएंगे । इसलिए हमें अपने मनों, हृदयों और जीवनों में रविवार को कभी नहीं भूलना चाहिए । यह दिन विजय का प्रतीक है । यहां पृथ्वी पर अैर वहां स्वर्ग में हम सारी महिमा तुझे ही देते हैं ।

१५. जब मसीही रविवार को छोटे छोटे काम कर लेते हैं तो प्रभु उन्हें कुछ नहीं कहता । परन्तु यदि यहुदि लोग सबत के दिन कोई काम करते थे तो मूसा की व्यवस्था उन्हें सजा देता थी । यदि उसी प्रकार प्रभु यीशु हमें प्रत्येक रविवार सजा दे ता कोई भी व्यक्ति मसीहत में नहीं आएगा । परन्तु जैसे ही शनिवार के लिए व्यवस्था की आज्ञा लुप्त हुई, तुरन्त रविवार की अनुग्रह की व्यवस्था आरम्भ हो गई (युहन्ना १:१८) । अनुग्रह की व्यवस्था के अनुसार अब मनुष्य अपनी सुविधा के अनुसार अपने काम कर सकता है । परन्तु वह सुविधाजनक तरीका मसीही विश्वास के अनुसार होना चाहिए ।

१६. (क) त्रिएकता ने रविवार (पहले दिन) को कहा, ''उजाला हो जाए'' । सो, यह पिता के काम करने का दिन था । (ख) पुनरूत्थान का दिन रविवार था । सो, यह पुत्र के काम करने का दिन था । (ग) पिन्तेकुस्त भी रविवार का ही हुआ । सो यह पवित्र आत्मा के काम करने का दिन था । ये तीन दिन

रविवार थे । इस प्रकार रविवार वह दिन है जिसे हम पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के काम करने के दिन के रूप में जानते हैं । क्या इससे बढ़कर आनन्द की कोई और बात हो सकती है ? इसलिए हम अपनी अनन्त स्तुति तुझे देते है ।

विभिन्न समयों के लिए उपयुक्त प्रार्थनाएं

१. सुबह उठकर की जानेवाली प्रार्थना ।

(१) हे प्रेमी पिता, हमें एक नया दिन देने के लिए, बीती रात के खतरों से बचाकर हमें आज सुबह नींद से जगाने के लिए मैं तेरी स्तुति करता हूँ । आमीन ।

(२) हे पिता सृष्टिकर्त्ता, आज मुझे जो भी काम करने हैं उनमें तू ही सहकर्मी बनना । आमीन ।

(३) हे प्रभु, मुझमें ऐसा चालचलन डाल कि आज मैं अपने व्यवहार में पवित्र बन सकूँ। आमीन ।

(४) हे परमेश्वर, आज तू मुझे जो कुछ बताना चाहता है वह मुझे बता। आमीन ।

(५) हे परमेश्वर हमारे उद्धारकर्ता, आज हमें हर प्रकार के खतरों से बचा। आमीन ।

(६) हे प्रभु हमारे चारवाहे, आज अपने मार्ग में हमें चला । आमीन ।

(७) हे उदार प्रभु, आज तू जो कुछ हमें देने वाला है उसे प्राप्त करने की क्षमता हमें दे । आमीन ।

२. पवित्रशास्त्र पढ़ने से पहले की जानेवाली प्रार्थना ।

(१) हे पिता, लिखित वचन के प्रेरक, अब मैं इसे पढ़ने वाला हूँ । अब मुझसे इस वचन के द्वारा बात कर और अपनी आवाज मुझे सुना । आमीन ।

(२) हे पवित्र परमेश्वर, जो कुछ तूने अपनी पवित्र पुस्तक में लिखा है, अब वह मेरे हृदय पर भी लिख दे । आमीन ।

(३) हे पिता, अच्छे विचारों के रचैयता, जब मैं तेरी पवित्र पुस्तक पढ़ता हूँ तो केवल वही विचार मेरे मन में आने दे जो तेरी प्रेरणा से आते हैं, और कोई गलत कल्पनाएं नहीं । आमीन ।

(४) हे पिता, हम पर प्रकट होने की इच्छा रखने वाले परमेश्वर, अपने वचन में उसे अपने आप को प्रकट कर और अपने हृदय को हमारे हृदय में प्रकट कर । अमीन ।

(५) हे पिता, देहधारी बुद्धि, जब मैं तेरे वचन का पढ़ता हूँ तो उसे भूले बिना अपने हृदय में बसाने की क्षमता दे । अमीन ।

(६) हे अनन्त पिता, चाहे स्वर्ग और पृथ्वी लुप्त हो जाएं परन्तु तेरा वचन लुप्त नहीं होगा । हमें अपने पवित्र आत्मा से प्रज्वल्लित कर दे ताकि तेरा सारा वचन हमारे जीवन में फैल जाए । तेरे पवित्र आत्मा ने तेरे पवित्र संतों का तेरा पवित्रशास्त्र और तेरी पुस्तक में लिखे हुए वचन दिए और उन्हें अद्भूत लिखतों में लिखवाया, बिल्कुल वैसे ही जैसे विद्यार्थी अपनी परीक्षा के लिए अपनी तैयारी करते है । हमारे स्वीकार करने के दभाव को तैयार कर ताकि उनके समान हम भी तेरे पवित्र आत्मा के कार्य का हममें प्राप्त कर सके । आमीन ।

(७) हे पिता हमारे पालनहार, मानवीय प्रचारक तेरे वचन को अलग अलग तरीके सिखाते हैं जिससे अलग अलग सिद्धांत बन जाते हैं । इसलिए हमें अपने वचन की ही व्याख्या सिखा । अमीन ।

३. मुख्य प्रार्थना पहले की जानेवाली प्रार्थना ।

(१) हे पिता, तू जा हमारा पिता है, अब मैं तुझ से बात करना चाहता हूँ । मुझे अपनी आवाज के साथ जान पहचान

करवा, वैसे ही जैसे बच्चे अपने पिता से बात करते हैं । जब मैं अपनी पीड़ा और खुशियां तेरे सामने रखता हूँ तो मुझमें से हिचकिचाहट, डर और यह संदेह हटा दे तू मुझ पर क्रोधित हो जाएगा । आमीन ।

(२) हे पिता, जैसे तुने अपने वचन में से मुझसे बात की है, मै भी साहस करके अपनी प्रार्थना में तुझसे बात करता हूँ । मेरी प्रार्थना केवल विनती न होकर स्तुति के द्वारा सम्पूर्ण भी हो जाए । आमीन ।

(३) हे पिता, तूने सबकुछ हमारे लिए रचा है, जैसे कि तेरे पवित्र वचन में लिखा है कि तू हमारे मांगने से भी अधिक देने में सामर्थी है, और अपना सबकुछ हमें देने की इच्छा रखता है । । आमीन ।

(४) हे पिता, तू जो हमेशा हमें देने के लिए तैयार रहता है, तूने अपने वचन में लिखा है कि हम प्रार्थना में जो कुछ मांगें और विश्वास करें कि वह हमें मिल गया है तो निश्चय ही वह हमारा हो जाएगा । इसलिए हम तेरी स्तुति करते हैं । जो कुछ ऊपर लिखा है उसका अनुभव करने के लिए हमारे पास विश्वास की सामर्थ होना आवश्यक है, जो तू ही हममें उत्पन्न करता है । आमीन ।

(५) हे पिता, त्रिएक परमेश्वर, तूने युहन्ना की पत्री में लिखा है कि हम जो कुछ भी तेरी इच्छा के अनुसार मांगते हैं तू वह सबकुछ हमें देता है । इसलिए हमारी इच्छा का तू अपनी इच्छा की अधीनता में ले आ ताकि प्रार्थना में हमारी और तेरी इच्छा एक हो जाए । आमीन ।

(६) हे पिता, तू जो अपने पुत्र के द्वारा हुआ है, हे पिता, प्रभु और उद्धारकर्त्ता, मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ क्योंकि तूने कहा है कि हम तेरे नाम में जो कुछ भी मांगे, तू वह हमें अवश्य देगा । यह सभी वायदों का केन्द्र पड़ता है । इसलिए मैं देरी प्रशंसा करता हूँ । इनमें आवश्यक क्षमता डाल कि हम युहन्ना १४:१४ मरकूस ११:२४ और १ युहन्ना ५:१४ को प्रत्येक प्रार्थना में याद रख सकें । आमीन ।

नोट : (यदि प्रत्येक प्रार्थना में उपरोक्त तीनों आयतें याद यखी जाएं तो हमारी सभी प्रार्तनाएं पूरी होंगी ।)

४. सुसमाचार प्रचार करते समय की जानेवाली प्रार्थना ।

(१) हे परमेश्वर, सब लोगों के स्वामी, तेरी इच्छा है कि सब बचाए । जैसे तूने मुझे बचाया है वैसे मुझे भी सुसमाचार

प्रचार करने के लिए समय का प्रयोजन कर ताकि अन्य लोग भी बचाए जा सकें । आमीन ।

(२) हे प्रभु, हमारे अगुवा, मुझ पर अनुग्रह कर कि मैं अपनी बुद्धि का उफयोग करके वहां जाऊँ जहां मुझे समय और परित्थितियों के अनुसार जाना चाहिए । आमीन ।

(३) हे पिता, तू जो हमें प्रचार करते समय बोलना सिखाता है, हमें क्षमता दे कि हम केवल वही शब्द बोलें जो तेरे हृदय के अनुसार उचित हैं, जिससे मूर्खतापूर्ण बतें और वे शब्द हमारे मुंह से न निकलें जा हमें अच्छे लगते हैं । आमीन ।

(४) हे पिता, तू जो उचित समय पर उचित अभिव्यक्ति देता है, जब हम तेरे वचन का प्रचार करते हैं तो हो सकता है कि यह कुछ लोगों में फल न लाए, जबकि अन्य लोगों में यह फल लाएगा । फिर भी, हमें बोलने की समार्थ दे क्योंकि हठिलों के लिए यह सजा का कारण और आज्ञाकारियों के लिए स्वर्गीय आशीष बनेगी । आमीन ।

(५) हे पिता, कई गुणी लोगों ने वचन को कभी नहीं सुना है । मुझे ऐसे लोगों के पास भेज । जब उनकी अज्ञानता दूर होती है तो उस समय तेरे वचन की व्याख्या का बहाव मुझमें से एक सोते के समान फूट निकले । आमीन ।

(६) हे पिता, तूने मुझे पवित्र आत्मा दिया है ताकि मैं सावधानपूर्वक सोच सकूँ । एक शिक्षक के समान मुझे उन कठिन प्रश्नों के उत्तर देना सिखा जो प्रचार करते समय मेरे सामने आते हैं । स्तिफनुस के वचनों की सामर्थ के आगे कोई नहीं ठहर पया था । उसी प्रकार हमें और उन लोगों पर अनुग्रह कर ताकि वे हमारे उत्तर सुन सकें और हमारे विरोध में आए बिना खुश हो सकें । आमीन ।

(७) होने दे कि जो लोग अपने आप को तेरे वचन का ज्ञानी समझते हैं वे हमारे द्वारा तेरे वचन की व्याख्या सुनकर अपनी अज्ञानता को पहचान सकें । तू उनके लिए मार्ग को समथर कर और एम्माउस के शिष्यों के समान उनके हृदयों में भी जलन भर दे । आमीन ।

५. युद्ध रोकने के लिए प्रार्थना

(१) हे पिता, तुन दाऊद के भजन में लिखा है कि तू लड़ाइयों को मिटाना है (भजन ४६:९) । इसलिए सब युद्ध रोक दे । अन्यथा बहुत लोग नाश हो जाएंगे और बहुत नुकसान होगा ।

(२) लोगों ने युद्ध के हथियार और लोगों को मारने के लिए हथियार बना लिए है । इन सब हथियारों को नष्ट कर दे ।

(३) मसीहियों को युद्ध करने के बाद पछतना पड़ेगा । दूसरे धर्मों के लोग कहते हैं कि जैसे परमेश्वर ने पुराने नियम में युद्ध करवाए, वैसे ही बाइबल लोगों को युद्ध करने की शिक्षा दे रही है । उन दिनों में अन्यजाति लोग यहूदियों से लड़ते थे क्योंकि उनमें शैतान समाया था और उन्हें उस्काता था कि यहूदियों को मार डालों परमेश्वर की प्रतिज्ञा के अनुसार मसीह उनमें न ले सके । इसलिए युद्ध आवश्यक हो गए थे । इसलिए युद्ध करने वालों में मन फिराव ला और उन्हें बचकर स्वर्ग ले जा । आमीन ।

६. परिवारों के लिए प्रार्थना

हे परमेश्वर, तूने परिवारों को बहुत सारे बच्चे दिए हैं । यह खुशी की बात है । परन्तु हम प्रार्थना करते हैं कि तू उन्हें अच्छा चरित्र दे । साथ ही माता-पिता को भी सामर्थ दे कि वे अपने बच्चों का पालन पोषण ईश्वरीय ढंग से कर सकें । माता-पिता को सिखा कि जब उनके बच्चे भटके जाते हैं तो वे उन्हें कैसे सुधारें । बच्चे जब अच्छे होते हैं तो उनका मार्गदर्शन करना आसान होता है और माता-पिता को उसमें कोई समस्या नहीं आती । परन्तु जब बच्चे सही मार्ग से भटक जाते हैं तो उन्हें वापिस लाने का काम माता-पिता के लिए बहुत कठिन होता है और यही ह समय होता है कि जब माता-पिता अपनी प्रार्थना, बुद्धि, विवेक और

शारीरिक बल का उचित उपयोग करें । इसलिए उन्हें ये सब क्षमताएं दे । कहा जाता है कि अब्राहम कभी किसी पर क्रोधित नहीं हुआ । क्योंकि उसके साथ रहने वाले सभी लोग सही थे और कभी किसी का सुधारने की आवश्यकता नहीं पड़ी । आज के बच्चे सही मार्ग से भटक गए हैं । उन्हें सुधारने के लिए माता-पिता को बहुत परिश्रम करना पड़ेगा । उन्हें ऐसा करने की क्षमता दे । तूने प्रेरित पौलुस के द्वारा लिखा कि ''बच्चे अपने माता-पिता काक आज्ञाउल्लंघन करने वाले हैं'' और ऐसा अब हो रहा है । तो उनका सुधार भी अवश्य होना चाहिए । जैसे कि माता-पिता अपने बच्चों के लिए जिम्मेदार हैं तो उन्हें अपने कर्त्तव्य भी अपने आप ही पूरे करने चाहिएं । हे सामर्थी प्रभु, हे एल-शैडाई, उन्हें अपनी सामर्थ दे । उन्हें मार्गदर्शन करने का बल दे । आमीन ।

जब कोई विरोधी ताकत घर में घूसती है तो एल-रौडई की सामर्थ स्वर्ग से उतरकर आने और उसका सामना करने में चूकेगी ।

(१) हे दयालू पिता, घर के बच्चे एक समूह से जूड़े होते हैं और इस समूह को विशेष स्वतन्त्रता समूह कहा जाता है । इसलिए वे अपने माता-पिता का कहना नहीं सुनते और अपनी मनमर्जी करते हैं । इससे माता-पिता को दुःख पहुंचता है । यह बहुत तेजी से हो रहा है । हमारी प्रार्थना है कि इन परिवारों में ऐसा कुछ भी न हाने पाए ।

(२) अन्य समूह: कुछ बच्चे ऐसे हैं कि उन जेसे पर घूमने के लिए चले जाते है । उनमें से यह आदत भी निकाल दे ।

(३) वे घर पर रहने की बजाय अपनी मर्जी के स्थानों पर घूमने के लिए चले जाते है । उनमें से यह आदत भी निकाल दे ।

(४) कुछ बच्चे कह कर जाते हैं कि वे स्कूल जा रहे हैं परन्तु स्कूल जाने की बजाय वे कहीं और चले जाते हैं और घर आकर कहते हैं कि वे स्कूल से आ रहे हैं । यह बुरा स्वभाव भी उनमें से निकाल दे ।

(५) जब पढ़ाई में ध्यान न लगाने के कारण वे फेल हो जाते हैं तो वे तेरे बारे में बुरा बोलते हैं । यह आदत भी उनमें से निकाल दे ।

(६) वे घर में से सामना चुराते हैं और जाकर बेच देते हैं या आपने मित्रों को दे देते हैं । वे अपने माता-पिता को बताए बिना अलग अलग स्थानों में जाते हैं । जब उनसे पूछा जाता हैं कि वे कहां क्यों गए थे तो वे कहते हैं कि उन्होंने एक आवाज सुनी थी जो उन्हें वहां बुला रही थी । यह सच है कि उन्होंने एक आवाज सुनी थी परन्तु वे नहीं जानते कि वह आवाज शैतान की थी । हमारी प्रार्थना है कि उन्हें यह पता चला जाए ।

(७) जब उनके माता-पिता उन्हें सजा देते हैं तो वे कठोर हो जाते हैं । उनमें से हठीलापन निकाल दे ।

(८) जब उनके माता-पिता उनसे कहते हैं कि प्रार्थना करो, बाइबल पढ़ो और गीत गाओ तो कहते हैं कि, ''जो आप हमें करने के लिए कह रहे हैं, उसे करने का हमारा मन नहीं है'' । इस गलत व्यवहार को भी उनमें से निकाल दे ।

(९) जब उनसे कहा जाता है कि उन्होंने गलती की है तो उसे स्वीकार भी नहीं करते । हे प्रभु, इन दिनों में शैतान लोगों के मनों में बदलाव ला रहा है । वह कुछ लोगों को बहुत दूर ले जाता है और वही उन्हें लौटा देता है । उन्हें इसके बारे में पता भी नहीं चलता । यदि शैतान कुछ मसीहियों को भिखारी के रूप में मिलता है और उन्हें बहका देता है तो वे समझने लग जाते वह यीशु मसीह है । इसलिए जांचे परखे बिना दान देना उचित नहीं है । साथ ही, शैतान बिना बात का डर पैदा कर देता है । इसलिए हमें सावधान रहना चाहिए ।

७. दैनिक उपयोग के लिए प्रार्थना

१. हे सर्वशक्तिमान परमेश्वर, तुने बहुत रोगियों को चंगा किया है । हमें भी चंगा कर ।

२. तुने बहुत अस्वस्थ लोगों का स्वास्थ्य दिया है । हमें भी अच्छा स्वास्थ्य दे ।

३. तूने बहुत लोगों में से बहुत रोगों को जड़ से निकाल फेंका है । उसी प्रकार, हम में से भी हर रोग को जड़ से निकाल दे ।

४. तूने बहुत संदेश बहुत लोगों को सुनाया है । हमें भी अपना संदेश सुना और सिख ।

५. तूने बहुत लोगों को तेरे वचन पर चलने का बल दिया है । हमें भी ऐसा बल दे ।

६. तुने बहुत लोगों को अपने वरदान दिए हैं । हमें भी अपना हुआ भावना हुआ वरदान दे ।

७. तूने बहुत लोगों को तेरी सेवा करने के लिए समय और ऊर्जा दी है । हमें भी ऐसा समय और ऊर्जा दे ।

८. तूने बहुत लोगों को हमेशा तेरी उपस्थिति में प्रार्थना करते रहने का समय दिया है । हमें भी ऐसे अवसर दे ।

९. तूने बहुत लोगों के द्वारा बहुत आदर प्राप्त किया है । हमारे द्वारा भी ऐसा ही कर ।

१०. तूने बहुत लोगों को शत्रुओं की युक्तियों से बचाया है । हमें भी वैसे ही बचा ॥

११. तूने बहुत लोगों को जहरीले प्राणियों और जंगली जीवों से बचाया है । हमें भी उनसे बचा ।

१२. तूने बहुत लोगों को निरादर से बचाया है । हमें भी बचा ।

१३. तूने बहुत लोगों को भिन्न मौसम की परिस्थितियों से बचाया है । हमें भी बचा ।

१४. जिस उद्देश्य के लिए तुने हमें रचा है, जब तक वह पूरा न हो जाए, हमें अकेला न छोड़ ।

१५. तुने बहुत लोगों के मार्ग की रूकावटों को हटाया है । हमारे लिए भी ऐसा ही कर ।

१६. हममें से जो मृत्यु के समीप हैं उन्हें शान्तिमय मृत्यु दे ।

१७. हममें से उन लोगों को तैयार रख जिन्हें तेरे रैप्चर के लिए तैयार रहना है ।

१८. हमारे दर्शनों और अच्छे विचारों और अच्छी चाहतों को पूरा कर ।

१९. हमारे पूरे जीवन को अपने विचारों से भर दे ।

२०. हमें कायरता, अविश्वास, डर और अस्थाई विश्वास में पड़ने से बचा ।

२१. हम जिन जिन बातों के लिए प्रार्थना करना भूल गए हैं, उन सभी को हम तेरे सामने रखते हैं ।

२२. साथ ही हमारी, सारी मनुष्यजाति, सब पशुओं, पक्षियों, सारी वनस्पति और अपनी सारी सृष्टि रक्षा कर ।

२३. शैतान के सारे कामों को तुरन्त नाश कर दे ।

२४. हमारे सारे जीवनभर अपने स्वर्गदूतों की सुरक्षा हमें प्रदान कर ।

२५. हमारी नज़रअंदाजी, अयोग्यता, और हमारी पापी दशा को अब और इसी समय हममें से निकाल दे । हमें पवित्र बना ।

२६. हमें सुरक्षित रख कि हम तुझ त्रिएक परमेश्वर, पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के द्वारा दिए गए किसी भी काम की सीमा से आगे न बढ़ जाएं ।

२७. सब अच्छी वस्तुओं में हमें समृद्ध बना ।

२८. जबकि हम इस पृथ्वी पर हैं, तभी अपने पुत्र के द्वारा हमारे नाम अभी स्वर्ग में दर्ज कर ले ।

२९. हम पूरी विनम्रता के साथ तुझ से विनती करते हैं कि तू हमारे जीवन के आरम्भ, मध्य और अंत के समय, कठिनाई के समय, आनन्द के समय, और अज्ञानता के समय में की सारी स्तुति को स्वीकार कर । साथ ही हमारे नाशमान शरीर के द्वारा, हमारे जीवन के आरम्भ से लेकर अंत तक और स्वर्ग में की हमारी सारी स्तुति को स्वीकार कर । आमीन ।

८. बांधने की प्रार्थना

हे प्रभु, आज सुबह उठते ही हम यह बांधते की प्रार्थना तुझे अर्पित करते हैं (मत्ती १८:१८)

हमें वह सारी प्रार्थनाएं करनी हैं, जो हमें अर्पित करना आवश्यक है । स्विच को ऑन करने के तुरन्त बाद ही ट्युव लाइट नहीं जग जाती । परन्तु फिर भी हम स्विच को दोबारा नहीं दबाते बल्कि रोशनी के आने की प्रतिक्षा करते हैं । इसे दोबारा दबाने के आवश्यकता नहीं पड़ती । हम लोग जो दूसरे आगमन के समीप हैं, हमें समय के अनुसार उपयुक्त प्रार्थनाएं करनी हैं और जागृत रहना है । फिर, जैसे इस्त्राएली लाल समुद्र के पास अपने शत्रुओं से बच गए थे, वैसे ही हम भी बच जाएंगे । हम जो कुछ पृथ्वी पर बांधते हैं, प्रभु उसे स्वर्ग में बांध देता है । हम जो कुछ पृथ्वी पर खोलते हैं, प्रभु उसे स्वर्ग में खोल देता है । इन पंक्तियों

में हमारी स्वतन्त्रता के अनुसार हमें हमारी इच्छा और हमारा चयन मिलता है । यह कितनी बड़ी आशीष है ! बहुत विश्वासी इस आशीष को खो बैठते हैं । जैसे स्वर्ग में उजाला में उजाला है, वैसे ही हमारे प्रार्थना कक्ष में हमारी प्रार्थना प्रज्वलित रहेगी ।

९. विशेष प्रार्थना (मत्ती ६:६)

यदि हम वचन का ऐसा हिस्सा पढ़ते हैं जिसे हम पहले से जानते हैं, उसके संदर्भ के अनुसार, उसमें से नया उजाला चमके ।

१. हे पिता, हे त्रिएक परमेश्वर, हम संकट के समय में बड़े आनन्द के साथ अपनी विनती तेरे पास लाए हैं । यह दुःख, डर और आजादी की कमी का समय है । परन्तु तेरे वचन की प्रतिज्ञा के अनुसार यह समय आनन्द, साहस, आजादी और सेवकाई में तीव्रता प्राप्त करने का समय है । पहली सदी में, सारे संसार के साम्राज्यों ने कलीसिया को नाश करने का प्रयास किया, परन्तु इस पवित्र साम्राज्य को मिटा नहीं सके । इस प्रकार यह कलीसिया पिछली बीस सदियों से एक नदी के सामन बहती आ रही है । यह तेरी सामर्थ है जिसके लिए मैं तेरी प्रशंसा करता हूँ ।

२. हमारे समय में हमारे देश के बहुत सारे लोग, जो तेरी कलीसिया और सामान्य तौर पर हमारी कलीसिया के द्वारा प्रयोजन

की गई वस्तुओं का लाभ उठाते आ रहे हैं, अब ऐसा कह रहे हैं कि जब स्थानीय धर्म (हिन्दु) मौजूद है तो विदेशी धर्म (मसीहत) यहां क्यों आए ? और यह कि मसीहियों को स्थानीय धर्म अपना लेना चाहिए, ताकि तेरी कलीसिया की वृद्धि रूक जाए । वे बाईवल में लिखी बातों के खिलाफ बोलते हैं और उसी प्रकार इसके विरोध में परचे और पुस्तके भी छापते हैं । इसलिए हे परमेश्वर, उनके विचारों को बान्ध दे, उनके बोलों को बान्ध दे, उनके छापाखानों को बन्द कर दे, और हम पर निशाना साधकर किए जानेवाले कामों को रोक दे । परन्तु पहले हमें ज्वलंत कर ताकि हम उन्हें अपने प्रार्थना कक्ष में बान्ध सकें । हम में से डर आत्मविश्वास की कमी को दूर कर दे । तब हम उन्हें बान्ध सकेंगे ।

३. जब शत्रु इस्त्राएलियों के विरूद्ध उठे ता तू चुप रहा । उसी प्रकार जब हमारे शत्रु हमारे विरुद्ध उठते हैं तो भी तू चुप रहता है ताकि हमें प्रार्थना करने के लिए उभार साके । इसलिए हम तेरी प्रशंसा करते हैं ।

४. हमें शांतिमय मन और प्रकाशन दे ताकि हम अपने विरोधियों की ओर से उठने वाले हर कदम को लांघने के लिए उद्देश्य से पूरा प्रयास कर सकें ।

५. साथ ही, जब हम तुझ से प्रार्थना कर रहे हैं तो इसी समय वे भी अपने देवताओं से प्रार्थना कर रहे हैं । जब वे अपनी शिक्षाओं का प्रचार कर रहे हैं तो हमारे मुखों को बल दे ताकि हम तेरी शिक्षाओं का प्रचार कर सकें । जब वे खुलेआम गम्भीर और बकवादी बातों को फैला रहे हैं तो हमारे हृदयों को बल दे, हमारी बुद्धि को सामर्थ दे और उचित जवाब देने के लिए हमारी स्मरण शक्ति को उपयुक्त अभिव्यक्ति दे ताकि हम उन्हें अपनी बातचित के द्वारा कायल कर सकें और तेरे वचन के अनुसार ''जो कोई तुमसे पूछे उसे जवाब दे सकें'' । ऐसा इसलिए है क्योंकि तूने लिखा है, बोलने वाले तुम नहीं हो, बल्कि तुम्हारे पिता का आत्मा तुम्हारे द्वारा बोलता हैं'' (मत्ती १०:१९-२०) । इसलिए, हम पर अपने आत्मा की कृपादृष्टि कर और उन पर प्रकट हो जिनके पास दर्शन का वरदान है । हमें सक्षमता दे कि हम उनके परचों और पुस्तकों का सही जवाब दे सकें और धन का प्रयोजन भी कर ताकि हम अपने जवाबों को छाप भी सकें । हममें अच्छे विचार उत्पन्न ताकि हम उन्हें कोमलता से जवाब दे सकें जा हमारे विरुद्ध युक्तियां बना रहे हैं ।

६. हमें क्षमा करने के स्तर तक भी ले आ ताकि हम वैसे प्रार्थना कर सकें जैसे हमारे प्रभु ने क्रूस पर की थी, ''हे पिता, इन्हें

क्षमा कर दे क्योंकि ये नहीं जानते कि ये क्या कर रहे हैं । साथ ही, प्रभु तू उन्हें नहीं बल्कि उनके दुष्ट प्रयासों को नाश कर । हमारे देश के नागरिकों को उभार ताकि वे बाइबल प्राप्त करने के लिए बाइबल सोसाइटी को लिखें, वैसे ही जैसे चीन में हुआ था । सब लोगों में ऐसी जोरदार सामर्थ भर दे कि वे मसीही प्रचार, परचों और पुस्तकों की मांग करें ।

७. हे परमेश्वर, अनन्त अनुग्रह के परमेश्वर, तेरी स्तुति हो । शैतान को पता है कि उसके पास अधिक समय नहीं बचा है इसलिए वह विश्वासयोग्य लोगों पर आक्रमण कर रहा है । तू उसकी योजनाओं को सफल न होने दे । उसके प्रयोसों को सफल न होने दे । तूने फरात नदी पर चार दुष्टात्माओं का बान्धा था (प्रकाशितवाक्य ९:१४) । सो उसी प्रकार सारी पृथ्वी पर घूमने वाली दुष्टात्माओं और उनके कामों को भी बान्ध दे ।

नोट : (१) हमें बान्धन में पड़े हुए लोगों को ध्यान में रखते हुए उपेराक्त पद्धति के अनुसार प्रार्थना करनी है ।

९. इन्जैक्शन प्रार्थना

हे अनुग्रहकारी प्रभु, इन अंत के दिनों में, आरम्भिक दिनों के समान नहीं, जब कभी कलीसिया कहीं भी बाइबल खोलकर

तेरा वचन पढ़ती है, तो उस वचन में से तेरी सामर्थ निकले और तेरी कलीसिया की देह में एक इन्जैक्शन के समान उतर जाए । आरम्भिक दिनों में वचन पढ़ा जाना आज के इन अंतिम दिनों में वचन पढ़े जाने से भिन्न था और आज पिता देवदास के द्वारा समझाए जाने के बाद वचन पढ़ा जाना भिन्न है । जब भी हम पन्ने खोलकर पढ़ते है, और आकान, यहूदा, हनन्याह और सफीरा, कौन और सदोम के बारे में पढ़ते है, तो हमें उन्हें अधर्मी न सोचजे हुए पढ़ना है । परमेश्वर के वचन में कोई दुष्ट भविष्यवाणी नहीं है । ऐसे कोई इन्जैक्शन नहीं हैं जो तुरन्त मार डालें । खुश हों कि केवल ऐसे इन्जैक्शन मौजूद हैं जो रोगों को दूर भगाते हैं और हमें बल देते हैं ।

हे प्रभु यीशु, उन्हें ही नहीं बल्कि सताव को भी अपनी कलीसिया के लिए अच्छे इन्जैक्शन में बदल डाल । हे प्रभु यीशु, आज भी हमें नए संदेश दे । होने दे कि यह भी सामर्थ देने वाला इन्जैक्शन बन जाए । तुझे महिमा मिले, तेरी कलीसिया को विजय मिले और शैतान के कामों को विनाश मिले । प्रभु भोज के द्वारा अपना लहू कलीसिया में डाल दे । केवल तेरा लहू ही तेरी कलीसिया में डाला जाए । आमीन ।

१०. विभिन्न प्रकार की प्रार्थनाओं के संग्रह

१. प्रार्थना : हे अनुग्रहकारी पिता, हम स्तुति करते हैं कि जब भी तेरी उपस्थिति में आते हैं और तेरे सामने कोई विनती रखते हैं और किसी के लिए भध्यस्थी करते हैं तो तू हर बार हमारी प्रार्थनाओं पर कान लगाता है । चाहे तू मेरे मांगने से पहले ही मेरी आवश्यकताओं को जानता है, फिर भी मैं अपने निवेदनों को तेरे सामने रखता हूँ, क्योंकि तूने कहा है, ''मांगो तो तुम्हें मिलेगा'' ।

हे पिता, तू जो कुछ मुझे देना चाहता है, वह मुझे दे । निरंतर मुझे अपनी संतान के रूप में स्थिर करता रह ताकि मैं तेरी उपस्थिति में आजादी से चल फिर सकूँ । मुझे साहस दे कि मैं कठिन समयों में और ऐसे समय में जब मैं कुछ भी नहीं समझ पाता, तेरे साथ खड़ा रह सकूँ । तेरे बारे में मेरी अच्छी समझ बदलने न पाए । निरंतर मुझे पाप से और पाप के परिणामों से बचाए रख । हर समय मुझे अपना वचन सिखाता रह । हमेशा मेरे आत्मा से बात करता रह । साथ ही, मुझे अपने वफादार सेवक के रूप में स्थिर कर ताकि मैं धन्यवाद के साथ तेरा कार्य करता रहूँ तुल्हन बनने के मार्ग से भटकने से मुझे बचाए रख । जब मैं तेरी इच्छा के विपरित कुछ मांगने का प्रयास करूँ, तो वे बातें मेरी प्रार्थना में आ ही न सकें । साथ ही, जब मुझे किसी विशेष

बात के लिए प्रार्थना करना है ता समय समाप्त न होने देना । मुझे प्रार्थना करने की सही पद्धति सिखा । ऐसे प्रचारक भेज जो तेरे संदेश को सब लोगों तक ले जो सकें । तेरे सुसमाचार को प्रचार करने में होनेवाले उनके प्रयासों को बहुगुणित कर । सब पापियों, दुखी लोगों, गरीबों और नाइन्साफी सहने वालों के साथ भलाई करने वालों के कार्यें को बढ़ा । अपने पुत्र का चेहरा निहारते हुए इस प्रार्थना का सुन । आमीन ।

२. पवित्रीकरण : हे परमेश्वर ! तुने मुझे जो कुछ दिया है वह सब मैं तुझे अर्पित करता हूँ । अपना शरीर, अपना आत्मा और अपना सबकुछ; विशेषकर मेरे अतीत, वर्तमान और भविष्यत का सारा जीवन तुझे अर्पित करता हूँ । चाहे मुझे तेरी इच्छा अच्छी न लगे, तो भी मेरी सहायता कर कि मैं आज से इसकी आधीनता में आ सकूँ । मैं वह हर भला काम जो मैं नही कर पाता हूँ, वह काम जो मैं अपनी इच्छा और तेरी इच्छा के विरूद्ध करता हूँ, तेरे सामने रखता हूँ । मैं अपने रिस्तेदार, मित्र, शत्रु, अधिकारी और जो लोग मुझे पसंद नहीं करते, सभी को तेरे हाथों में सौंपता हूँ । मैं सब पशुओं, पक्षीयों और हमें नुकसान पहुंचाने वाले सब प्राणियों को तेरे हाथों मं सौंपता हूँ । उसी प्रकार मैं शैतान, दुष्टात्माओं और हमें नुकसान पहुंचाने वाली अंधकार की सभी

शक्तियों को तेरी सामर्थ से बान्धता हूँ । हमें नुकसान पहुंचाने वाले सब वृक्षों और पत्थरों को भी मैं तेरे हाथों में सौपता हूँ । मैं नुकसान पहुंचाने वाले पांचों तत्वों को भी तेरे हाथों में सौंपता हूँ । अपने पुत्र के चमकते चेहरे को देखते हुए हमारे इस पवित्रीकरण को स्वीकार कर । आमीन ।

३. वापीस की प्रार्थना : एक बार एक गांव में बहुत बुरी लड़ाई हो रही थी । उस दिन एक व्यक्ति अपनी बीमार पुत्री से मिलने आया और लड़ाई के बारे में सुनते ही वह अपनी पुत्री को अपने घर ले गया । यह संसार एक गन्दा संसार है, मृत्यु का संसार है दुष्टात्माओं और जहरीले प्राणियों का संसार है, ऐसे लोगों का संसार है जो अपने आप को शैतान की अधीनता में रखते हैं । इसलिए हमारा परमेश्वर, पिता हमें यहा नहीं रखेगा और हमें स्वर्गीय घर में ले जाएगा । वह शीघ्र वापिस आएगा । यह दूसरा आगमन है । जब पिता अपनी पुत्री को अपने पास ले जाएगा, वह ऐसा नहीं केहगी, ''मैं नहीं आऊंगी'' । उसी प्रकार, हमें भी ऐसा नहीं कहना चाहिए कि ''हम बादलों में नहीं जाएंगे'' । हमें कहना चाहिए, ''प्रभु, पिता, मैं तैयार हूँ'' । हे प्रभु, ऐसा कहने का अनुग्रह हमें दे । आमीन ।

मारानाथा (१ कुरिन्थियों १६:२२)

* * *

प्रभु के आगमन के लिए प्रार्थनाएं और स्तुति

१. दूर देश में रहने वले एक जवान व्यक्ति ने अपने लोगों का खबर भेजी कि वह घर वापिस आ रहा है । क्या वे ऐसी खबर सुनकर खुश न होंगे और उसके आने कि प्रतीक्षा नही करेंगे ? उसी प्रकार, प्रभु ने भी वापिस आने की प्रतिज्ञा की है । क्या वह जवान यह संदेश भेजने के बाद वापिस नही आएगा ? क्या वह एक न एक दिन जरूर वापिस नही आएगा ? जिस प्रकार उसके लोगों ने उसकी प्रतीक्षा की, यदि उसी प्रकार हम भी प्रभु यीशु के आने की प्रतिक्षा करें तो हम उसके साथ प्रतिज्ञा किए हुए देश में जा सकते हैं । हे प्रभु, हम इस बात पर प्रतीती करते हैं और आपकी स्तुति करते हैं । आमीन ।

२. एक बार एक व्यक्ति ने अपनी पत्नी का पत्र लिखकर बताया कि वह कौन सी ट्रेन से पहुंच रहा है और उसे लेने के लिए उसे स्टेशन पर आने के लिए कहा और यह भी कि यदि वह न आई तो वह कभी भी घर वापिस नही लौटेगी । पत्नी ने भोजन तैयार किया और समय पर रेलवे स्टेशन पहुंच गई । उस दिन ऐसा हुआ कि ट्रेन दो घण्टे देरी से आ रही थी । इसलिए, उस

व्यक्ति की पत्नी यह सोचकर घर चली गई कि ट्रेन के आने के समय तक वह वापिस स्टेशन पर आ जाएगी । परन्तु जब वह चली गई तो ट्रेन भी आ पहुंची, उसका पति ट्रेन में बैठकर किसी दूसरी जगह चला गया । उसी प्रकार, यदि हम भी प्रभु के आने की प्रतीक्षा करते हुए धीरज खो दें या लापरावाह हो जाएं तो हो सकता है कि वह अनापेक्षित समय ही आ जाए और हम उसके साथ न जा सकें । इसलिए, हमारे लिए यह अनावश्यक है कि हम तैयार होकर उसकी प्रतीक्षा करें ताकि उसके साथ जा सकें है प्रभु, हम पर अनुग्रह कर कि हम पूरी तैयारी के साथ तेरी प्रतीक्षा करें जिसके लिए हम तेरी स्तुति करते हैं ।

३. एक बार एक जुलाहा किसी यात्रा पर जाने के लिए ट्रेन पकड़ने से ठीक पहले एक कम्बल बुन रहा था । चूंकि केवल थोड़ा सा ही काम बचा था, इसलिए उसने अपने साथियों से कहा कि तुम लोग पहले चले जाओ और अपने व मेरे लिए टिकट खरीद लेना । उसने अपना काम जल्दी जल्दी समाप्त किया और सब कुछ सम्भाल कर स्टेसन चला गया । क्योंकि वह देरी से पहुंचा था, इसलिए ट्रेन जा चुकी थी । इसी प्रकार, सम्भव है कि हम उस यात्री की तरह जाने-अनजाने में रैप्चर से चूक जाएं । हे प्रभु हमें तैयार कर ताकि आपके दूसरे आगमन के समय हम पीछे न छूट जाएं । हम आपकी देखभाल के लिए आपकी स्तुति और महिमा करते हैं ।

४. कुछ लोग अपने ऊपर बहुत सारी जिम्मेदारियाँ ले लेते हैं, और उनमें इतना अधिक उलझ जाते हैं कि वे प्रभु के आगमन के बारे में भूल जाते हैं । इसी दौरान, प्रभु आ जाता है और जो लोग तैयारी के साथ उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे, उन्हें अपने साथ ले जाता है । जो लोग पहले अपना काम समाप्त करेंगे और फिर प्रभु के आगमन की प्रतीक्षा करेंगे, वे पाएंगे कि वह तो आकर जा भी चुका है । साथ ही साथ, जो लोग सांसारिक अभिलाषाओं में फंसे हुए हैं, वे भी प्रभु के साथ नही जा पाएंगे । हे प्रभु हम पर अनुग्रह कर कि हम इस प्रकार आपके आगमन को नजरअंदाज करके दोषी न पाए जाएं । हम आपकी स्तुति करते हैं ।

५. जो लोग प्रार्थना, वचन और प्रभु के आगमन के विचारों पर मन नही लगाते, वे प्रभु के आगमन का हिस्सा नही बन सकते । इसलिए प्रभु की महिमा को पाने के लिए आवश्यक है कि हम अपने प्रतिदिन की दिनचर्या के बावजूद भी इन सब बातों पर मन लगाया करें । हे प्रभु, हम यह भरोसा रखते हैं कि आप हममें अपने आगमन के इन विचारों को निरंतर भरेंगे और इसके लिए आप हमारी स्तुति स्वीकार करें ।

६. जिस प्रकार एक किसान खलिहान में सूप के द्वारा फटक फटक कर गेहूँ को साफ करता है उसमें से कंकर औए भूसी

अलग करता है, उसी प्रकार हमें अपने पापमय विचारों और बुरे मार्गों को त्यागना होगा । केवल तब ही हम उस साफ गेहूँ के समान बन पाएंगे जो प्रभु के आगमन के समय उठाई जा सके । हे प्रभु, आप हमें अपने आप के शुद्ध करने में सहायता कर सकते हैं, जिसके लिए हम आपकी स्तुति करते हैं ।

७. एक स्त्री की एक बेटी थी, वह छोटी सी बच्ची अपने होथों और घुटनों के बल इधर उधर घूमती रहती थी और मिट्टी से अपने आप को गन्दा करती रहती थी । उसकी माँ उसे नहलाती थी । वह छोटी बच्ची बार बार वैसा ही करती और हर बार उसकी माँ उसे नहलाती थी । उसी प्रकार हमें भी अपने मनों को बुरे विचारों से साफ करते रहना हैं और निरंतर अपने आप को प्रभु यीशु के लहू से धोकर शुद्ध करते रहना है । यदि हम ऐसा तुरन्त न करें ता बहुत देर हो जाएगी । जिस भी क्षण हमसे पाप हो जाए, हमें तुरन्त प्रभु यीशु के लहू से अपने आप को शुद्ध कर लेना है, चाहे यह कितनी ही बार क्यों न हो, और प्रभु यीशु के लहू की विजय को अपने जीवन का सुरक्षा कवच बना लेना है, हे प्रभु हम आपकी महिमा करते हैं क्योंकि आप अपने दूसरे आगमन में हमें शामिल करेंगे ।

८. जो लोग लम्बी यात्रा पर जाते हैं, वे तब तक आरामदायक यात्रा नही कर सकते जब तक कि वे सुबह का

नाश्ता, दोपहर का भोजन, रात्रि का भोजन न खाएं और सुबह-शाम समय पर कॉफी न पीएं उसी प्रकार, यदि प्रभु की देह और लहू का आत्मिक भोजन न करें तो हम भी अपने जीवन की यात्रा पुरी नही कर पाएंगे । केवल प्रभुभोज लेने के द्वारा ही हम प्रभु के आगमन में शामिल हो सकते हैं । हे प्रभु हम यह प्रतीती करते हैं कि आपके ''पवित्र प्रभुभोज'' से पालन पोषण लेने के द्वारा ही हम आपके साथ रैप्चर में शामिल होने के लिए बल प्राप्त कर सकते हैं, जिसके लिए हम आपकी प्रशंसा करते हैं ।

९. मसीही मण्डलियों में ऐसे कुछ ही लोग हैं जो कहते हैं कि प्रभु का दूसरा आगमन निकट है । केवल कुछ लोग ही इसकी प्रतीती करते हैं । बाकी कुछ लोग इसकी प्रतीती नही करते । हे प्रभु, जो लोग इस पर प्रतीती नही करते, यदि उनका हृदय बदल सकता है तो ऐसा कर और उन्हें अपने विश्वास में बलवंत हो जाएं । संदेह करने वाले लोगों में विश्वास पैदा कर । जो लोग आपके आगमन में प्रतीती नही करते, जो प्रतीती कर ही नही सकते और जो प्रतीती कर चूके हैं, उन सभी को तैयार कर । हम भरोसा रखते हैं कि आप आपने आगमन के लिए आपनी कलीसिया को तैयार करेंगे और इसके लिए हम आपकी महिमा करते हैं ।

१०. गैर-विश्वासियों में से बहुत लोगों ने प्रभु को ग्रहण कर लिया है और बहुत लोग ऐसी भी हैं जो प्रभु पर विश्वास नही लाना चाहते । वे लोग रैप्चर के लिए तैयार होंगे ? किसी न किसी को आगे बढ़कर उन्हें सिखाना होगा, वरना वे लोग खो जाऐंगे । चाहे वे तैयार हैं या नही, हम प्रार्थना करते हैं कि उन्हें तैयारी में सहायता कर ।

११. मसीही लोग दृढ़ता से यह मानते हैं कि ''दूसरे आगमन'' से पहले कई घटनाएं घटेंगी । परन्तु हमें उन लोगों के लिए प्रार्थना करनी है जो लोग यह मानते हैं कि सब घटनाएं पहले ही पूरी हो चुकी हैं और अब कुछ भी होना बाकी नही है । इसलिए, हमें यह प्रार्थना करनी चाहिए कि मसीही लोग अलग अलग समयों के दौरान अलग अलग देशें में होनेवाली घटनाओं पर और उन घटनाओं पर जो अभी होना बाकी हैं, ध्यान दें । हमें यह प्रार्थना करनी चाहिए कि इन सब घटनाओं को शीघ्र दें । हमें यह प्रार्थना करनी चाहिए कि इन सब घटनाओं को शीघ्र ही लिख लिया जाए ताकि सारा संसार उन्हें जान सके हे प्रभु, हम प्रार्थना करते हैं कि आप ऐसे भक्तों का खड़ा करें जो इन सब घटनाओं और चिन्हों को लिख सकें और आपके दूसरे आगमन के चिन्हों का संसार के सामने प्रस्तुत कर सकें, इसके लिए हम आपके लिए अपना आभार व्यक्त करते है ।

१२. राजा शाऊल, अभीषिक्त होने, परमेश्वर का आत्मा पाने, और युद्धों में विजयी होने के बावजूद अंत में भटक गया । उसी प्रकार, कुछ मसीही लोग लगभग अंत तक दृढ़ता से खड़े रहते हैं, परन्तु अंतिम घड़ी में निराश होकर हार जाते हैं । हे प्रभु हम आपका धन्यबाद करते हैं कि आप हमें ऐसी परिस्थितियों में पड़ने से बचाए रखेंगे ।

१३. जिन्होंने अभी तक न तो सुसमाचार सुना है और न ही प्रभु के दूसरे आगमन के बारे में सुना है, हो सकता है कि वे लोग अंतिम क्षणों में ग्रहण कर लिए जाएं, ठिक उन यात्रियों के समान जा रेलवे स्टेशन पर देरी से पहुंचने हैं और ट्रेन तब पकड़ने हैं जब यह धीरे धीरे चलना आरम्भ कर देती है । क्या क्रुस पर टंगे हुए चोर ने भी अंतिम घड़ी में अपना हृदय नही बदला था ? हे प्रभु, हम यह प्रतीती करते हैं कि आप हमें और कई लोगों को अपने आगमन में इस प्रकार शामिल होने का अनुग्रह प्रदान करेंगे । जिसके लिए हम आपके प्रति अपना आभार व्यक्त करते हैं ।

१४. कुछ लोग अपनी मौत के समय अपना हृदय बदलते हैं और उनमें से थोड़े लोग ही अपके आगमन के लिए तैयार हो पाते हैं और वह भी आपके अनुग्रह के कारण होता है । हम विनती करते हैं कि हम पर वैसा ही अनुग्रह कर, और हम आपका धन्यवाद करते हैं ।

१५. कुछ विश्वासी दूसरे आगमन के समय अपने अच्छे कामों को पूरा करने में लगे हुए होंगे, और सम्भव है कि जो लोग तैयार हैं वे भोजन करते समय भी उठा लिए जाएं । हे प्रभु हम भरोसा रखता हैं कि आप हम पर यह अनुग्रह करेंगे कि हम चाहे कुछ भी कर रहे हों या किसी भी अवस्था में हों, हम रैप्चर में उठा लिए जाएं और जिसके लिए हम आपका धन्यवाद करते हैं ।

१६. रैप्चर के समय मर चूके विश्वासी लोग जीवित हो जाएंगे और उठा लिए जाएंगे, जिसके लिए हम आपके बहुत आभारी हैं ।

१७. कुछ विश्वासी किसी दूसरे की मौत का मातम कर रहे होंगे । लेकिन फिर भी वे रैप्चर में उठा लिए जाएंगे ।

१८. कुछ लोग ऐसी प्रतीक्षा कर रहे होंगे जैसे एक बेटी अपने ससुराल से अपने पिता के घर जाने की प्रतीक्षा कर रही हो । उसी प्रकार विश्वासीयोग्य लोग भी उसी प्रकार प्रतीक्षा कर रहे हैं जैसे दुल्हन अपने दुल्हे के आगमन की प्रतीक्षा करती है । इसलिए क्लीसिया एक दुल्हन के रूप में अपने दुल्हे यीशु मसीह से मिलेगी । जो लोग प्रतीक्षा नही की रहे होंगे, वे इससे चूक जाएंगे, हे प्रभु हम आपकी स्तुति करते हैं क्योंकि आप ''प्रतीक्षा कर रही क्लीसिया'' बनने के लिए हमारी सहायता करेंगे ।

१९. रात दिन समुद्र में तेज हवाओं के कारण बड़ी लहरें शोर करती रहती हैं। हवाओं कि तरह ही पवित्र आत्मा विश्वासीयों के लगों को बिना रूके हिलता रहता है । तब वे उद्धार के लिए इश्वर की स्तुति करते हैं और प्रभु के दूसरे आगमन में स्तुति करते आनन्दित होते हैं । हे प्रभु यह दोनो प्रकार की स्तुति करना होगा ।

२०. हे हमारा प्रभु, आपने जगत के आरम्भ में जो सूर्य, चांद और तारागण बनाए थे,वे आज भी आकाशमण्डल में प्रकाशमान हैं । वे सब अपने निर्धारित क्षत्रों में परिक्रमा कर रहे हैं। उसी प्रकार हे प्रभु, आनन्द कि ज्योति में दृढता से चलते रहने और आपके आगमन के तैयार रहने के लिए हमें आशीष दें । हम पर अनुग्रह करें कि हम आपके दिए हुए उद्धार और आपके दूसरे आगमन के लिए आपकी प्रतीक्षा करें ।

२१. हे प्रभु, अनुग्रह कर कि हमारी आत्मा आप पर ही मनन करती है । अनुग्रह कर कि हमारी आत्मा आपकी आत्मा के साथ एक हो जाए । सहायता कर कि हम अपनी आत्मा से आपकी स्तुति कर पाएं ताकि हम यह भरोसा एंव प्रतीती करते हैं कि आप हमें आपके उद्धार पाए दूसरे आगमन के विषय में तब तक आपकी स्तुति करने वाला .... जब तक कि हम आपके

शिकायनाह के बादलों तक न पहुंच पाए । और इसके लिए हम आपके बहुत आभारी हैं ।

२२. हे प्रभु, हमारी लिखित स्तुति को उस स्तुति में बदल दे जो लागो और आपके सामने ग्रहणयोग्य है । जो लिखित है वह मिट पाएगा, परन्तु आपके आत्मा की सहायता से दी गई स्तुति हमेशा सफल रहेगी । ऐसा अनुग्रह देने के लिए हम आपकी महिमा करते हैं ।

२३. हे परमेश्वर, अनुग्रह कर कि हमारी स्तुति लिखित दस्तावेजों के समान निश्चित और वास्तविक बन जाए ।

२४. प्रभु का दूसरा आगमन उद्धार की तरह ही सुनिश्चित हैं । हमारी स्तुति और तैयारी को भी सुनिश्चित बना दे ।

२५. स्वर्गीय महिमा के भागीदार बनते समय हम अपनी नाशमान अवस्था को छोड़ देंगे । उसी प्रकार, अनुग्रह कर कि हम अपनी स्तुति में, आगमन की तैयारी में, और विश्वास में पाई जाने वाली कमियों को छोड़ दें ।

२६. कागज पर कलम के द्वारा लिखी गई स्तुति की प्रार्थनाएं मिट सकती हैं, परन्तु आत्मा के द्वाराा हृदयों पर लिखी गई स्तुति कभी भी मटिाई नही जा सकती । हम विनती करते हैं कि इस प्रकार लिख ।

२७. यदि राज्यपाल के समान कोई प्रतिष्ठित व्यक्ति आनेवाला हो तो लोग पूरे इलाके के सवांरते हैं, रंग-रोगन किया जाता है और सड़कों की सफाई की जाती है । यदि राजाओं का राजा आने वाला है तो क्या हमें उससे भी बढ़कर नही करना चाहिए ? हे प्रभु, अनुग्रह कर कि हम तेरे लायक बनने के लिए अपने आप को तैयार कर सकें ।

२८. जब राजमन्ड्री में से पहली ट्रेन गुजरी, तो लोग अपने घरों, खेतों, गलियों और बाजारों में से इस अद्भूत वस्तु को देखने के लिए जमा हो गए । उसी प्रकार प्रभु की ट्रेन में चढ़ने के लिए पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण चारों दिशाओं से लोग इकट्ठा हो जाने चाहिए ।

२९. हे प्रभु यीशु, हम तक उद्धार लाने के लिए आपका अभिषेक किया गया,उसके लिए हम आपकी स्तुति करते हैं ।

३०. हे यीशु, हमारे प्रभु, पुराने नियम में यह भविष्यवाणी की गई थी कि आप मानव अवतार धारण करके इस संसार में आएंगे । वे सब आपके पहले आगमन की अद्वितिय प्रतिज्ञाएं थीं जो आपके दूसरे आगमन का आधार बनी, जिनके लिए हम आपकी स्तुति करते हैं ।

३१. हे हमारे प्रभु, आपका जन्म मनुष्यजाति में अद्वितिय था । इसने आपके दूसरे आगमन का परिचय करावाया । जिसके लिए हम आपकी स्तुति करते हैं ।

३२. आपने इस संसार में जिस प्रकार का जीवन जीया, वह अपने आम में एक महान इतिहास बन गया । यह आपके दूसरे आगमन की ओर इशारा करता है, जिसके लिए हम आपकी स्तुति करते हैं ।

३३. हे हमारे प्रभु, क्रुस पर आपकी मौत अनन्य थी, जिसे किसी दूसरे ने अनुभव नही किया था । यह आपके दूसरे आागमन की ओर इशारा करती है । इसलिए, हम आपकी महिमा करते हैं ।

३४. हे प्रभु, आपका पुनरूत्थान महिमामय था, जिसे पहले कभी किसी ने नही जाना था । हम इसमें आपके दूसरे आगमन को देखते हैं और आपकी प्रशंसा करते हैं ।

३५. हे प्रभु, आपका स्वर्गारोहण केवल लोगों की समझ से परे ही नही था बल्कि अद्वितिय था, वह इनोक और एलिय्याह के समान नही था । यह आपके दूसरे आगमन का एक सत्य प्रमाण है ।

३६. आपका दूसरा आगमन बड़ी उत्सुकता के साथ आपकी प्रतीक्षा करने की इच्छा जगाता है और इसी प्रकार

क्लीसिया का उठा लिया जाना भी एक अनुठी बात है । यह आलौकिक विवाह का अनुष्ठान है । बादलों में आपका आगमन ही है जो क्लीसिया को आपस में बान्धे रखता हैं । यह आगमन संसार को दुविधा में डाल देने वाला है । इसलिए हम आपका धन्यवाद करते हैं, इस अनुठे आगमन के लिए हमें तैयार कर । हम आपको दण्डवत करते हैं ।

३७. धरती की उत्पति से लेकर अब तक आप अपने भक्तों के द्वारा बुलाए जाने पर हर बार आते रहे हैं । यदि हम उन सभी को गिनें तो आपका आगमन बहुत बार हो चुका है । इसलिए हम आपकी महिमा करते हैं ।

३८. यहां तक कि स्वर्ग के संत और स्वर्गदूत भी प्रभु के दूसरे आगमन का बड़ी बेसब्री से इन्तज़ार कर रहे हैं, हालांकि उनकों इसकी आवश्यकता नही है । यह जानते हुए कि हमें सम्पूर्ण छुटकारे की आवश्यकता है, हमें और भी कितना उत्सुक होना चाहिए ? हे प्रभु, हमारे चारों ओर के लोग हमसे पूछते हैं कि आप कब आएंगे । हमारे बदले में आप उन्हें उत्तर दें ।

३९. आपने अपना आज्ञा उल्लंघन करने वाले बिलाम के पास गदहे के द्वारा मानवीय आवाज में संदेश भेजा, आज भी आपके लोग जो मसीही और विश्वासी लोग हैं, वे आपके आगमन

के बारे में निश्चित हैं और लापरवाह हो चुके हैं । क्या वे अपने पशुओं से ऐसा संदेश नही सुन सकते या क्या यह आपके उद्धार की योजना के खिलाफ है ? हे प्रभु, हम प्रार्थना करते हैं कि अपने तरीके से उन तक यह संदेश पहुंचा ।

४०. हे प्रभु यीशु, आपने घोषणा की है कि आप आएंगे, फिर भी आपके आने में देरी रही है । कृपया हमारी सहायता करे कि हम दूसरों को इस देरी का कारण समझा सकें ।

४१. ऐसा कहा गया था कि प्रभु शीघ्र ही वापिस आएगा, जिससे पहले सृष्टि में और विश्वासियों के हृदयों में कुछ चिन्ह दिखाई देंगे । ''शीघ्र'' शब्द समय के बारे में बताता है जो विश्वासियों के लिए एक चिन्ह है । यदि यह किसी व्यिक्ति की समझ से परे है तो किसी समूह मे इस पर चर्चा नही की जा सकती । अनुग्रह करें कि यह किसी के लिए परेशानी का कारण न बने । हे प्रभु आप शीघ्र आ रहे हैं, हमें भी शीघ्र तैयार रहने में सहायता करें ।

४२. हे प्रभु, अपने आगमन के लिए हर प्रजाति के लोगों को तैयार कर विभिन्न भाषाओं के लोगों को तैयार कर । विभिन्न दशाओं-पापी, रोगी, निर्धन, मुसीबत में फंसे हुए, तनावग्रस्त और मर रहे लोगों को तैयार कर । उन लोगों का तैयार कर

जिन्होंने आपका वचन सुन लिया है, जिन्होंने सुना परन्तु ग्रहण नही किया, और जिन्होंने ग्रहर किया परन्तु अभी भी सांसारिक जीवन जीते हैं । आदमखोर लोगों में से भी कम से कम कुछ को तैयार कर । सम्भव है कि कुछ लोग मृत्यु से ठिक पहले उद्धार पा लें । कुछ लोग विश्वासी होने के बावजूद भी रैप्चर से चूक जाएंगे । इसलिए, उन्हें तैयार कर जो इसके लिए इच्छुक हैं । हे प्रभु, बच्चों को आशीष दे । जबकि वे आपके खिलाफ कोई पाप नही करते, उन्हें जी आपने रैप्चर में ले जा । इस प्रार्थना को सुनने के लिए हम आपका धन्यवाद करते हैं ।

४३. जब सदोम नगर नाश किया जा रहा था, स्वर्गदूतों ने आकर कुछ लोगों को उस विनाश में से बचा लिया । परन्तु इब्राहीम ने व्यर्थ प्रार्थना की, फिर भी वह तनाव में नही आया । जो लोग आपके आगमन की तैयारी में लगे हुए हैं और जब उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर उन्हें नही मिलता तो उन्हें तनाव से बचाएं । हे प्रभु, हम भरोसा रखते हैं कि आप हमें तनाव से बचाकर रखेंगे और हम आपकी महिमा करते हैं ।

४४. हे प्रभु यीशु, हम, नए नियम के विश्वासियों, को प्रेरणा दे कि हम उसी उत्सुकता से अपके दूसरे आगमन की प्रतीक्षा करें, जिस उत्सुकता से पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं ने आपके पहले आगमन की प्रतीक्षा की ।

४५. हे प्रभु, हमने दस आज्ञाओं के द्वारा अपने हृदय को शुद्ध करना सीखा है । परन्तु हम यह भी विनती करते हैं कि हमें अपने आत्मा के द्वारा सिखा कि हम अपने आपको आपने मन और विवेक में आपके दूसरे आगमन के लिए किस प्रकार तैयार करें ।

४६. हमने सीखा है कि आपके वचन के द्वारा अपने आप को कुछ हद तक कैसे शुद्ध करें । हमें यह भी सीखा कि हम आपके दूसरे आगमन के लिए अपने मनों को ज्योतिर्मय करने के द्वारा अपने आप को कैसे तैयार करें और अपने आत्मा के द्वारा अपने वचन का ज्ञान भी दे ।

प्रकाशित वाक्य का स्तुति :

१. प्रकाशित वाक्य २:६ । और हमें एक राज्य और अपने पिता परमेश्वर के लिये याजक भी बना दिया; उसी की महिमा और पराक्रम युगानुयुग रहे । आमीन ।

२. प्रकाशित १:१७,१८ । कि मत डर; मैं प्रथम और अन्तिम और जीवता हूं । मैं मर गया था । अैर अब देख; मैं युगानुयुग जीवता हूँ; और मृत्यु और अधोलोक की कुंजियां मेरे ही पास हैं ।

३. प्रकाशित ४:८,९ । और वे रात दिन बिना विश्राम लिए यह कहते हैं, कि पवित्र, पवित्र, पवित्र प्रभु परमेश्वर, सर्वशक्तिमान, जो था, और जो है, और जो आनेवाला है । और जब वे प्राणी उस की जो सिंहासन पर बैठा है, और जो युगानुयुग जीवता है, महिमा और आदर और धन्यवाद करेंगे ।

४. प्रकाशित ४:१०, ११ । तब चौबीसों प्राचीन सिंहासन पर बैठने वाले के साम्हने गिर पड़ेंगे, और उसे जो युगानुयुग जीवता है प्रणाम करेंगे; और अपने अपने मुकुट सिंहासन के

साम्हने यह कहते हुए डाल देंगे कि हे हमारे प्रभु, और परमेश्वर, तू ही महिमा, और आदर, और सामर्थ के योग्य है; क्योंकि तू ही सब वस्तुएं सृजीं और वे तेरी ही इच्छा से थी; और सृजी गईं ।

५. प्रकाशित ५:९,१० । और वे यह नया गीत गाने लगे, कि तू इस पुस्तक के लेने, और उसकी मुहरें खोलने के योग्य है; क्योंकि तू ने वध हो कर अपने लोहू से हर एक कुल, और भाषा, और लोग, और जाति मे से परमेश्वर के लिये लोगों को मोल लिया है । और उन्हें हमारे परमेश्वर के लिये एक राज्य और याजक बनाया; और वे पृथ्वी पर राज्य करते हैं ।

६. प्रकाशित ५:१२ । और वे ऊंचे शब्द से कहते थे, कि वध किया हुआ मोम्ना ही समार्थ, और धन, और ज्ञान, और शक्ति, और आदर, और धन्यवाद के योग्य है ।

७. प्रकाशति ५:१३, १४ । जो सिंहासन पर बैठा है, उसका, और मेम्ने का धन्यवाद, और आदर, और महिमा, औरै राज्य, युगानुयुग रहे । और चारों प्राणियों ने आमीन कहा, और प्राचीनों ने गिरकर दण्डवत् कयिा ।

८. प्रकाशति ६:१० । और उन्होंने बड़े शब्द से पुकार कर कहा; हे स्वामी, हे पवित्र, और सत्य; तू कब तक न्याय न

करेगा ? और पृथ्वी के रहने वालों से हमारे लोहू का पलटा कब तक न लेगा ?

९. प्रकाशति ७:१० । और बड़े शब्द से पुकार कर कहती है, कि उद्धार के लिये हमारे परमेश्वर का जो सिंहासन पर बैठा है, और मेम्ने का जय-जय-कार हो ।

१०. प्रकाशति ७:११,१२ । वे सिंहासन के साम्हने मुंह के बल गिर पड़े; और परमेश्वर को दण्डवत् कर के कहा, आमीन । हमारे परमेश्वर की स्तुति, ओर महिमा, और ज्ञान, और धन्यवाद, और आदर, और सामर्थ, और शक्ति युगानुयुग बनी रहें ।

आमीन ।

११. प्रकाशति १०:६ । और जो युगानुयुग जीवता रहेगा, और जिस ने सवर्ग को और जो कुछ उस में है, और पृथ्वी को और जो कुछ उस पर है, और समुद्र को और जो कुछ उस में है सृजा उसी की शपथ खा कर कहा, अब तो और देर न होगी ।

१२. प्रकाशति ११:१५,१६ । जगत का राज्य हमारे प्रभु का, और उसके मसीह का हो गया । और वह युगानुयुग राज्य करेगा ।

१३. प्रकाशित ११:१८ । और अन्यजातियों ने क्रोध, और तेरा प्रकोप आ पड़ा और वह समय आ पहुँचा है, कि मरे

हुओं का न्याय किया जाए, और तेरे दास भविष्यद्धक्ताओं और पवित्र लोगों को और उन छोटे बड़ों को जो तेरे नाम से डरते हैं, बदला दिया जाए, और पृथ्वी के बिगाड़ने वाले नाश किए जाएं ।

१४. प्रकाशति १२:९ । और वह बड़ा अजगर अर्थात वही पुराना सांप, जो इब्लीस और शैतान कहलाता है, और सारे संसार का भरमाने वाला है, पृथ्वी पर गिरा दिया गया; और उसके दूत उसके साथ गिरा दिए गए ।

१५. प्रकाशति १२:१०- १२ । फिर मैं ने स्वर्ग पर से यह बड़ा शब्द आते हुए सुना, कि अब हमारे परमेश्वर का उद्धार, और सामर्थ, और राज्य, और उसके मसीह का अधिकार प्रगट हुआ है; क्योंकि हमारे भाइयों पर दोष लगाने वाला, जो रात दिन हमारे परमेश्वर के साम्हते उन पर दोष लगाया करता था, गिरा दिया गया । और वे मेम्ने के लोहू के कारण, और अपनी गवाही के वचन के कारण, उस पर जयवन्त हुए, और उन्होंने अपने प्रणों को प्रिय न जाना, यहां तक कि मृत्यु भी सह ली । इस कारण, हे स्वर्गों, और उन में रहने वालें मगन हो; हे पृथ्वी, और समुद्र, तुम पर हाय ! क्योंकि शैतान बड़े क्रोध के साथ तुम्हारे पास उतर आया है; क्योंकि जानता है, कि उसका थोड़ा ही समय और बाकी है ।

१६. प्रकाशति १४:७ । और उस ने बड़े शब्द से कहा; परमेश्वर से डरो; और उस की महिमा करो; क्योंकि उसके न्याय करने का समय आ पहुँचा है, और उसका भजन करो, जिस ने स्वर्ग और पृथ्वी और समुद्र और जल के सोते बनाए ।

१७. प्रकाशति १४:८ । फिर इस के बाद एक और दूसरा स्वर्गदूत यह कहता हुआ आया, कि गिर पड़ा, वह बड़ा बाबुला गिर पड़ा जिस ने अपने व्यभिचार की कोपमय मंदिरा सारी जातियों को पिलाई है ।

१८. प्रकाशति १५:३, ४ । और मेम्ने का गीत गा गाकर कहते थे, कि हे सर्व शक्तिमान प्रभु परमेश्वर, तेरे कार्य बड़े, और अद्भुत हैं, हे युग युग के राजा, तेरी चाल ठीक और सच्ची है । हे प्रभु, कौन तुझ से न डरेगा और तेरे नाम की महिमा न करेगा ? क्योंकि केवल तू ही पवित्र है, और सारी जातियां आकर तेरे साम्हने दण्डवत् करेंगी, क्योंकि तेरे न्याय के काम प्रगट हो गए हैं ।

१९. प्रकाशति १६:५, ६, ७ । और मैं ने पानी के स्वर्गदूत को यह कहते सुना, कि हे पवित्र, जो है, और जो था, तू न्यायी है और तू ने यह न्याय किया । क्योंकि उन्होंने पवित्र लोगों, और भविष्यद्वक्ताओं का लोहू वहाया था, और तू ने उन्हें

लोहू पिलाया; क्योंकि वे इसी योग्य हैं । फिर मैं ने वेदी से यह शब्द सुना, कि हां हे सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर, तेरे निर्णय ठीक और सच्चे हैं ।

२०. प्रकाशति १६:१५, १६ । देख, मैं चोर की नाईं आता हूं; धन्य वह है, जो जागता रहता है, और अपने वस्त्र कि चौकसी करता है, कि नंगा न फिरे, और लोग उसका नंगापन ने देखें । और उन्होंने उन को उस जगह इकट्ठा किया, जो इब्रानी में हर-मगिदोन कहलाता है ।

२१. प्रकाशति १७:१४ । ये मेम्ने से लड़ेंगे, और मेम्ना उन पर जय पाएगा; क्योंकि वह प्रभुओं का प्रभु, और राजाओं का राजा है; और जो बुलाए हुए, और चुने हुए, ओर विश्वासी उसके साथ हैं, वे भी जय पाएंगे ।

२२. प्रकाशति वाक्य १८:२० । हे स्वर्ग, और हे पवित्र लोगों, और प्रेरितों, और भविष्यद्धक्ताओं, उस पर आनन्द करो, क्योंकि परमेश्वर ने न्याय करके उस से तुम्हारा पलटा लिया है ।

२३. प्रकाशति १९:१-७ । इस के बाद मैं ने स्वर्ग में मानो बड़ी भीड़ को ऊंचे शब्द से यह कहते सुना, कि हल्लिलूय्याह !

उद्धार, औ महिमा, औरै सामर्थ हमारे परमेश्वर ही की है । क्योंकि उसके निर्णय सच्चे और ठीक हैं, इसलिये कि उस ने वड़ी वेश्या का जो अपने व्यभिचार से पृथ्वी को भ्रष्ट करती थी, न्याय किया, और उस से अपने दासों को लोहू का पलटा लिया है । फिर दूसरी बार उन्होंने हल्लिलूय्याह ! कहा : और उसके जलने का धुआं युगानुयुग उठता रहेगा । और चौबीसों प्राचीनों और चारों प्राणियों ने गिर कर परमेश्वर को दण्डवत् किया; जो सिंहासन पर बैठा था, और कहा, आमीन, हल्लिलूय्याह ! और सिंहासन में से एक शब्द निकला, कि हे हमारे परमेश्वर से सब डरने वाले दासों, क्यो छोटे, क्यो बड़े; तुम सब उस की स्तुति करो । फिर मैं ने बड़ी भीड़ का सा, और बहुत जल का सा शब्द, और गर्जनों का सा बड़ा शब्द सुना, कि हल्लिलूय्याह ! इसलिये कि प्रभु हमारा परमेश्वर, सर्वशक्तिमान राज्य करता है । आओ, हम आनन्दित और हमारा परमेश्वर, सर्वशक्तिमान राज्य करता है । आओ, हम आनन्दित और मगन हों, और उस की स्तुति करें; क्योंकि मेम्ने का ब्याह आ पहुंचा: और उस की पत्नी ने अपने आप को तैयार कर लिया है ।

***

सात धान्यता

१. धन्य है वह जो इस भविष्यद्वाणी के वचन को पढ़ता है, और वे जो सुनते हैं । प्रकाशति वाक्य १:३ ।

२. मुरदे प्रभु में मरते हैं, वे अब से धन्य हैं, प्रकाशति वाक्य १४:१३।

३. धन्य वह है, जो जागता रहता है, और अपने वस्त्र कि चौकसी करता है । प्रकाशति वाक्य १६:१५ ।

४. कि धन्य वे हैं, जो मेम्ने के ब्याह के भोज में बुलाए गए हैं; प्रकाशति वाक्य १९:९।

५. धन्य और पवित्र वह है, जो इस पहिले पुनरूत्थान का भागी है । प्रकाशति वाक्य २०:६ ।

६. धन्य है वह, जो इस पुस्तक की भविष्यद्वाणी को मानता है । प्रकाशति वाक्य २२:७ ।

७. धन्य वे हैं, जो अपने वस्त्र धो लेते हैं, क्योंकि उन्हें जीवन के पेड़ के पास आने का अधिकार मिलेगा, और वे फाटकों से हो कर नगर में प्रवेश करेंगे । प्रकाशति वाक्य २२:१४ ।

✻ ✻ ✻

Bible Mission HQ Guntur